मनोजमंजरी ।

द्वितीय कलिका ।

परमोत्तम स्फुट कवित्तों का नायका भेद क्रम से अपूर्व संग्रह ।

डुमरॉवँ निवासी नकछेदी तिवारी उपनाम अजान कवि द्वारा संग्रहीत ।

पूर्णानन्द एक बार समग्र देखने से होगा भक्ति रस छोड़ने में ।

भारतजीवन य द्रित हुई ।

सम्वत् १९४२

प्रथम बार १०००] [मूल्य डांक व्यय सहित ॥/)॥

मुद्रित विषयों का सूचीपत्र ।

मनोजमञ्जरी ।

—✽✽✽—

द्वितीय कलिका ।

॥ श्री गणेशायनमः । अथ मंगलाचरण, कवित्त ॥

स्याम तन घन पर विज्जु से बसन पर मोहिनी हँसन पर सोभा उमगी रहै । खोरवारे भाल पर लोचन विसाल पर उर बनमाल पर खेलत खगी रहै ॥ जंघ जुग जान पर मंजु मोरबान पर श्रीपति सुजान मति प्रेम सों पगी रहै । नूपुर नगन पर कंज से पगन पर आनद मगन मेरी लगन लगी रहै ॥ १ ॥

—✽✽✽—

अथ नायका लक्षण ॥ दोहा ।

जिहि बनिता की सुघरता लखि मुद लहत सुजान ।
ताहि कहत है नायका कोबिद कलानिधान ॥ २ ॥

उदाहरण ॥ कवित्त ।

चुनी से चरन चांदनी मे चिलकत चकचोंधत चकोर चिनगी के चांप दूनरी । चामीकरहू तें चांप चोगुनी चमक चोखी चंपक बरन चोली चुभी चंचु भूनरी ॥ चन्द्रमुखचन्द्रिका तें चकई चपत चित चोपत प्रवीन बेनी

चौत चंद सूनरी । चुई सी परति चपला सी चै चपल चख चंचल चितौन चटकीली चारु चूनरी ॥ ३ ॥

चामीकर जूह चंप चांदी को चलन कहा चिन्तामनि चेरिन के चाकर लहत हैं। चिलक चटक चहूं घांयन चमतकार चारमुख चक्रपानि चकित रहत हैं ॥ चांपन चरन को चतुर जुग चेटुआ हैं चैन सों प्रवीन बेनी चरित कहत हैं। चारु अति चंडिका को चन्द्रमुख चन्द्रमौलि चखन चकोर किये चोप सों चहत हैं ॥ ४ ॥

कंगन करन कल किंकिनी कलित कटि कंचन कंगूरा कुच कुंभ कारी जामिनी । कानन करनफूल कोमल कपोल कंठ कंबुक कपोत कीर कोकिल कलामिनी ॥ केसर कुसुम कलधौत की कलून कांति कोविद प्रवीन बेनी करिबरगामिनी । कोक कारिका सी किन्नरीक कन्यका सी किल काम की कला सी कमला सी खासी कामिनी ॥ ५ ॥

जमुना अन्हायबे को जाति जब प्रान प्यारी दौरत चकोर मोर भौंर भीर हार सी । कोक की कला सी चपला सी चारु चन्द्रमा सी चंपक लता सी मेनका सी मैन साल सी ॥ गोकुल की गैंड़ें गोरी ग्वालिनी गुमान भरी गहगहे गात बड़ लोचन मराल सी । सौतिन को साल सी वि

साल लाल माल सी प्रवाल रवि बाल सी कपूर के मसाल सी ॥ ६ ॥

कीरतिकिसोरी तेरे गात की गुराई विज्जु छटा सी सोहाई सीरी इन्दु कर जाल सी। सहज सुवास जाको केसर सी केतकी सी सोनजुही मालती सी अमल मराल सी ॥ श्रीपति निदाघन जड़ित मखमल पुंज परम नरम अति सोहै मखिमालसी। कनक प्रवाल सी नवीन दीन पाल सी कपूर के मसाल सी सलोनो लाल माल सी ॥ ७ ॥

चोप करि रची है विरंचि रूप रासि कैसी कोक की कला सी चारु चातुरी की साला सी। चन्द्रमा सी चांदनी सी चामीकर चंचला सी सुधा सी सखीजन को सोतिन को हाला सी ॥ कहा मंजुघोषा उरवसी औ सुकेसी दत्त जाके छबि आगे वारियत मैनवाला सी। चंपक की माला लागे हिय मे बरसकाला सिसिर दोसाला होति ग्रीषम मे पाला सी ॥ ८ ॥

लगत समीर लंक लहके समूल अंग फूल से दुकूलन सुगंध बिथुर्यो परे। चंद सो बदन मंद हासी सुधाहन्द अरविन्दन मुदित मकरंदन मुर्यो परे ॥ ललित लिलार श्रम झलक अलक भार मग मे धरत पग जावक घुर्यो

परै । देव मन नूपर परम पद दूपर ह्वै भूपर अनूप रूप रंग निचुर्यो परै ॥ ९ ॥

जगमगे जोबन जराज तरवन कान ओठन अनूठे रस हांसी उमड़ो परै । गोरे मुख सेत आवै उसमे उ-रोज बिन्द बन्दन लिलार बड़े बार घुमड़ो परै ॥ गोरे मुख सेत सारी हीरन किनारीदार दैत मनि झुमका झमकि झुमड़ो परै । बड़े २ नैन कजरारे बड़े मोती नथ ठोढ़ी मे ठहर होड़ा होड़ी हुमड़ो परै ॥ १० ॥

सोहै सेत सारी मंजु मोतिन किनारी भारी भीर मे निहारी जात संग सखियान के । सदानंद सुन्दरी न कोऊ यह रूप जाके आनन की आभा सी न आभा ससि भान के ॥ दृगन की ओर लागी कानन की छोर जैसी भृकुटी मरोर जोर जोरे धनु बान के । धीरी चाल वारी मुख बीरी माल वारी वह पीरी साल वारी रहै नीरी अंखियान के॥

चार कैसी अंक लंक लचकत कुच भार चारु छवि घेरदार घाघरो चिरति है। सुबरन वेली सी बिराजै अ-लबेली बाल खेली हंस चाल गज गिर मे थिरति है ॥ तिलक कपोलन मुबारक कह्यो न जाय कमल करोर नैन कोर निदरति है । आनद सदन के कलानिधिबदन ऐसी उलही मदन कैसी दुलही फिरति है ॥ १२ ॥

अलक पै अलिवृन्द भाल पै अरधचंद भू पै धनु नैनन पै वारीं कंज दल मै। नासा कीर मुकुर कपोल बिम्ब अधरन दारो वारीं दसननि ठोढ़ी अम्ब फल मै॥ कंबु कंठ भुजन मृनाल दास कुच कोक त्रिवली तरंग वारीं भौंर नाभि थल मै। अचल नितंबन पै जंघन कदलिखंभ लाल मखमल वारीं बाल पड़ातल मै॥ १३॥

मन्द मुसकान मे अनन्द छवि छलकत छिन २ छीत छवि छीन छपाकर को। लाल कवि भूखन बसन को बनाव दिपै दूनी दुति देह की न कहूं पटतर की॥ तैसी स्याम सारी में लसत ओप भारी देखि हाय करि हारी हिये प्यारी जलधर की। भौंहैं कजरारी दृग अंजन सुभारी कहो कापै असवारी आज भई पंचसर की॥ १४॥

कवि पजनेस केलिवांछित त्रिभावनैनी दोने है दिठोना स्रम सेद मुखवर पै। दीठि मिचि जाति मीची इचति न ऐंची खैंची लिखति न तसवीर २ गर पै॥ निमिख निहारी नेह दीपक सिखा सो चारु राजै मनिमंदिर दरीची के कगर पै। रूपती के नखत लों लखत न जौलों तौलों झखत नगीच मीच बैठी मैनसर पै॥१५॥

पीत सित मिस्रित मुकेसन समस्त सारी जाहिर जजिबवारी जगत जगी परै। हीरन के प्रदर प्रकास प्रतिबिम्बन तें पग २ मग जगमग उमगी परै॥ मर्कत मलीन

चन्द्रकान चकचौंधे कौंधे पजन पिया के अंग अद्भुत फबी परै। बहकि सुगंध चंदनादिक महक मूक पावक लहक झांकि दाहक दबी परै ॥ १६ ॥

सवैया।

दास कहे लगि भादो कुहूंकी अँधारी घटा घन से कच कारे। सूरज बिम्ब मे ईंगुर बोरे बंधूक से हैं अधरा अरुनारे ॥ बाड़ो की आंच के ताए बुझाए महाविख के जम जौ के संवारे। मारन मंत्र से बीजुरी सान लगाए नराच से नैन तिहारे ॥ १७ ॥

कुन्द की वेलि धों सोने की सांट कछू यह जानी न जाति धौं का है। देखिवेई ते जिआवति आखिन ओट भए हरि लेति उछाहै ॥ याही के पानिप सिंधु के मध्य गयो मन बूड़ि न पावत थाहै। दामिनी है किधौं कामिनी है किधौं और बिरंचि रची रचना है ॥ १८ ॥

है करतार की कारीगरी सुलखी तिहि की यह रीति नई है। स्यामता बिन्दुकरी प्रथमे तिहि में पुनि अंकुर-ताई ठई है ॥ नीचे तें ऊंचे उरोज भए अंग अंगनि ओप अनूप दई है। काम महीप के मंदिर में कलसा धरि के पुनि नेंव दई है ॥ १९ ॥

दोहा।

जे बनिता भाखी सुधर ते हैं तीन प्रकार ।
स्वीया परकीया बहुर सामान्या सुखमार ॥ २० ॥

अथ स्वकीया * लक्षण ।

निज पतिही के प्रेममय जाको मन बच काय ।
कहत स्वकीया ताहि सों लज्जा सील सुभाय ॥२१॥

उदाहरण—सवैया ।

तुम नाम लिखावती हो हम पै हम नाम कहा कहो लीजिये जू। अब नाव चले सिगरे जल में थल में न चले कहा कीजिये जू॥ कवि मञ्चित ओसर जो अकती-सकती नहीं हां पर कीजिये जू। हम तो अपनो बर पूजती हैं सपनेहु न पोपर पूजिये जू॥ २२ ॥

कवित्त ।

द्योस बरसाइत के सकल सिंगार साजि सरसिज-नैनी अति रति निदरति है। लाल जगमगित जवाहिर के आभरन चंद्रमुखी चांदनी चहूंवा पसरति है । गोरी गौनहाई गुनभरी गरबीली बाल विविध प्रकार पूजि

---

* स्वकीया और पतिव्रता में अन्तर है वा नहीं, यदि है तो क्या है ?

पायन परति है ॥ घर की रिसातीं अनखातीं सब नगर की कुल वार बर की न भांवरी भरति है ॥ २२ ॥

दोहा ।

कैसे धौं या बदन की कहत जाल मग जोति ।
याको मुसक्यान्यो नहीं ओठन बाहिर होति ॥ २३ ॥
जानति सौति अनीति है जानति सखी सुनीति ।
गुरु जन जानत लाज है पीतम जानत प्रीति ॥ २४ ॥
एक स्वकीया की कही कविन अवस्था तीन ।
मुग्धा इक मध्या बहुरि पुनि प्रौढ़ा परबीन ॥ २५ ॥

अथ मुग्धालक्षण ।

झलकति आवै तरुनई नई जासु अंग अंग ।
तासों मुग्धा कहत हैं जे प्रबीन रसरंग ॥ २६ ॥

उदाहरण—कवित्त ।

जल में दुरी है जैसे कमल की कलिका है उरजन ऐसे दीनी सरुचि दिखाई सी । गंग कहै सांझ सी सोहाई तरुनाई आई लरिकाई मध्य कछु मैं न लखि पाई सी ॥ श्यामा को सलोनो गात तामें दिन द्वैक मांझ फिरी सी चहति मनमथ की दोहाई सी । सीसी में सलिल जैसे सुमन पराग तैसे सिसुता में झलमलै जोबन की झांई सी ॥ २७ ॥

मृगन की मीनन की चंचलाई चखन में मोतिन की हीरन की जोति है रदन में । ओठन में आई है मिठाई सब मिमिटि कै दाख में न ऊख में न स्वाद सरदन में ॥ महाकवि बालम के खुले हैं बिसाल भाल राती दिन राजति मसाल सी सदन में । बिधना गुलाब कैसो अरक उतार मानो चन्द की निकाई राखी प्यारी के बदन में ॥ २८ ॥

लागी दीठि लगन लजान लागी लोगन तें लंक लागि छमन लोभान लागि पजनेस । चंपक प्रसून दल दुति कलिता के गात और २ अंग ओप अंगन परत देख ॥ कसमसे कसे उकसे कसे उरोजन पै उपटत कंचुकी की तुरप तिरीछी रेख । उदया अस्ताचल की दोनों कोर दाबि मानो दीपत नबीन पथ रबि रथ चक्र रेख ॥२९॥

सजन लगी है कहूं कबहूं सिंगारन को तजन लगी है कहूं ऐस वेस बारी को । चखन लगी है कछू चाह पदम कर त्यों लखन लगी है मंजु मूरति मुरारी की ॥ सुन्दर गोबिन्द गुन गुनन लगी है कछू सुनन लगी है बात बांकुरे बिहारी की । लगन लगी है लगी पगन हिये सो नेक लगन लगी है कछू पी की प्रानप्यारी की ॥ ३० ॥

सवैया ।

आई न जोति अबै तरुनाई की छाई न प्यारे की

प्रीति अछेहैं। बात सुने रस की बलदेव जू बूझे न रीझे करै नहिं तेहैं॥ छाड़ो न खेल अजौं गुड़िआन को यासक तें लगी देखन देहैं। कान्हे बिलोके बिलोकि है कछु बोले न डोले न खोजे सनेहैं ॥ ३१ ॥

दोहा।

बिन जाने अज्ञात है जाने जोबन ज्ञात ।
मुग्धा के है भेद यह कवि सब बरनत जात ॥ ३२ ॥

तत्र अज्ञात यौवना—सवैया।

जोबन आवत अंगन मे कठिनाई कछू कुच कोर भयो है। ता लखि के भभरी अवला नहीं जाने कोलाहल भेद नयो है॥ फारि कै ओढ़नी के अंचरा गहि पीपर पात तें बांधि दयो है। बापरी बाप पुकारे परे धरे हाथ हिये बर तोर भयो है॥ ३३ ॥

गाय के वेनु वजाय उठै अरु आरसी देखि सँवारत पागै। याही गलीन कलीन के उत्तर आवत या वृषभान की बागै॥ देह कटीलो ह्वै कांपि उठै घबराय रहै मन केहूं न लागै। कौन को है यह छोहरा सांवरो देखत मोहि डरावनो लागै॥ ३४ ॥

कवित्त।

फूली कुंज क्यारिन मे मालती मयंक लसी पानि

मे लिये तें दुति चंपकनि लीनी क्यों । संग की सहेलिन की कटि जो निहारि देखौं मेरी दिन राति जाति होति कटि छीनी क्यों ॥ ग्वाल कवि चुंबक अचानक दवाय हार माल को मिलाय पै सुवास रस भीनी क्यों । देखि नथुनी मे रज राजत दुनी मे बीर मेरी नथुनी मे चुनी तीनि पोहि दीनी क्यों ॥ ३५ ॥

कारे चीकने ह्वै कछु काहे केस आपुही तें बढ़ि २ बिथुरि छवा लौं लागी छलकन । बार २ बदन बिलोकन लगी हैं सौति आरि तोर सौरभ समूह लागी हलकन ॥ कौन धौं बलाय बसी अंग मे हमारे हमे देखिबे को कान्ह हनुमान लागी ललकन । जंघ लागी सटन घटन लागी लंक औ बढ़न लागो आखें री नितम्ब लागी ढलकन ॥ ३६ ॥

कैसी धौं निकाई सरसाई तन मेरे मांहि ह्वैरे बिन हेरी हरि लागी अब अहकन । गति गुरुआनी मति औरे सरसानी कछू काहे नैन कानन लौं लागी बोर बहकन ॥ पीर होति उर मे न धीर धर्यो जात मोपे कौन हेत लागी हनुमान लंक लहकन । आहि २ के २ उठें कांपि कांपि सौति काहे चाहि २ मो मुख चकोर लागे चहकन ॥

जैसिये बताइ दई अंगन नपाय दई तैसिये बनाय दई कौन छल छेहों मैं । गिरह लौं जांचि लीजे बूटहू सवाचि लीजे वांचि लीजे सेवक लिखे को ना दुरैहों मैं ॥

एहो ठकुराइन न मोहू को लखाय भेद संग की खेलाइन उंराहनो न लैहों मैं। घांघरी की अटनि बढ़ी सो फेर दीजै जातें कंचुकी की घटनि सु पूरि करि दैहों मैं॥

ज्ञातयौवना॥ कवित्त।

छाती लागी उचनि सकोचन सकान लागी खान लागी पानन उतान रस बतियां। कटि लागी घटनि अटनि चढ़ि जान लागी बैन लागी नटनि जगन लागी रतियां॥ चारु लागी चलन सुधारन अलक लागी जेव लागी जगन पगन लागी गतियां। नैन लागी फिरन निहोरन सखोन लागी मन लागी चोरन पढ़न लागी पतियां॥ ३८॥

चाव सों चटक रचि २ के रुचिर चीर रुचि सों पहिर के बिनोद बरसति जाति। कसि २ कंचुकी अमल बंगला मे बैठि सौतिन के सकल सोहाग करखति जाति॥ निरखि २ कर पायन की लागी हनुमान तरुनाई की निकाई परखति जाति। बेर २ मुकुर बिलोकति धरति फेर आंचर उघारि हेरि २ हरखति जाति॥ ४०॥

कवित्त।

आनन सकोर गुड़ियानन के खेलन तें सोरभ लगाय चढ़ि चौकी पै बिभाती है। बारन को प्यारी अति प्यार सों

सुधार हिये हारन के धारन को प्रीति सरसाती है ॥ कहै हनुमान सखियान तें बचाय अँखियांन को नचैबो लै मुकुर मुसकाती है। सुभरे सुबासन सों बासन बनाय चारु उभरे उरोजन को हेरि हरखाती है ॥ ४१ ॥

नवोढ़ा लक्षण दोहा।

अति डर तें अति लाज तें जो न चहै रति वाम।
तेहि मुग्धा को कहत हैं सुकवि नवोढ़ा नाम ॥ ४२ ॥

उदाहरण कवित्त।

तासन की गिलम गलीचा मखतूलन के झरफ भुमाऊ रही झूम रंग हारी में। कहै पद्माकर सु दीप मनि मालन की लालन की मेज फूल जालन संवारी में॥ जैसे तैसे तित छल बल सों छबीली वह छिनक छबीले को मिलाय दई प्यारी में॥ छूटि भाजी कर तें सु कर के बिचित्र गति चित्र कैसी पूतरी न पाई चित्र सारी में ॥४३॥

प्यारी को बुलाय चित्रसारी देखिबे के मिस ल्याई वह सखी जहां सोयबे को धाम है। प्यारे को निहारि परजंक में मयंकमुखी संक मानि भाजी राजी लंक अति छाम है॥ बेनी मृगनैनी की कुंवर कान्ह गहि लीनी ऐसी भांति भई न बखान अभिराम है। भौंरन की चारु चरकीली की परत चहै तम को चढ़ावत कमान मनो काम है ॥ ४४ ॥

सुनो जू नवोढ़ा सुधे आचर है जानति ना पिय पास बैठिबे की बात कहा जानी है। मेरे ल्यायबे की लाज कीजो लाल बलि जांउ आतुर न हूजो वह अबहीं अयानी है॥ यहै रस रीति कहि सुन्दर रसिक की जु रस ही सों मिलि बोलें बोरी रस बानी है। मैना सी पढ़ाई अब पहर अढ़ाई परतीति मैं बढ़ाई तब क्योंहूं क्योंहूं आनी है॥ ४५॥

सवैया।

न मानै न मान कहा भयो मोहन जानै न जान सनेह बिचार। समागम की छरकी है निसा की निसाकर दीजै अनेक प्रकार॥ तुमै लग लागी मुबारक आनि सु नागर हौ सुखसागर सार। नई दुलही की लुलऱता देखि गई करि जेयत बार ही बार॥ ४६॥

कुंज में संग सखीन के बाल बिलोकि रही सुखमा कुँदुरू की। कुंद गुलाबन की कलिका मृदुमाधवी चंचलताई रुरू की॥ कान परी पपिहा की पुकार चकाय अलीन को हेर सुरू की। पोठ पै चोटी पलोटी अजान चमोटी लगै मनो काम गुरू की॥ ४७॥

ल्याई सखी नवला को भोराय धरे दृग हारन लौं कै रटी ज्यों। देखत हीं मन मोहन को भई पानिप में गई

बूढ़ि घटी ज्यों ॥ प्यारे भरी अँकवारि पसारि बिहार को ज्यों रिझिनाथ ठटी ज्यों । यों निकसी कर कुंडल तें नट-कुंडली तें कढ़ि जात नटी ज्यों ॥ ४८ ॥

पिय प्यारे के प्यार बिचार बिचार प्रचार करे चतुराइन के । मन में अति सोच सकोच भरे करे सोच सकोच लुगाइन के ॥ हर दास महाउर देन न देति महा उर नेह सुभाइन के । परि लेति है बेरहि बेरि भटू ठकुराइन पाइन नाइन के ॥ ४९ ॥

अथ विश्रब्ध नवोढ़ा लक्षण दोहा ।

पति की कछु परतीति उर धरै नवोढ़ा नारि ।
सो विश्रब्ध नवोढ़ तिय बरनत बिबुध बिचारि ॥ ५० ॥

उदाहरण कवित्त ।

कान्ह चतुराई करि द्वार में बिछाई सेज जाति मनि मंदिर में मन भाई बाम को । कालिदास रसिकाई जाति के उपाय रहे आई जब सुन्दरि सिधारी निज धाम को ॥ चंचल चतुर छरकाइल छबीली बाल अंचल छुवे न दीनो स्याम अभिराम को । पाटी पग धरि गई चेटक सी करि गई नटी सी उछरि गई छरि गई स्याम को ॥ ५१ ॥

सवैया ।

रूठि उठे रुठि बैठे मक झिझिकारे झुके बिहंसे मुख

मोरै। दूनी ह्वै जाय कुवे अंचरा छटके फुफुती के छरा तन हेरे॥ घेरे सकेलिये संभु सदा गृह काज अकाज के जाति न नेरे। बाल के ख्यालहि में नंदलाल रहैं छकि रोज रहैं घर घेरे॥ ५२॥

गौनो भयो दिन द्वैक भयो कछु सुन्दर नेह दुहूं में नवीनो। खेलत काम कलोलन में ललना को सरूप लला लखि लीनो॥ दोउ उरोज दबे तिय के तब एक ही बेर सबै यह कीनो। रोई रिसानी डरी बहरानी चकी अकु-लानी चितै हँसि दीनो॥ ५३॥

कवित्त।

रैन मे जगाई कल कारन न पाई इमि ललन सताई परजंक अंक महियां। ससकि असकि कहरतिही बितीती निसा मसकि प्रवीन बेनी कीनी चित चहियां॥ भोर भए भौन के सकोन लगि गई सोय सखिन जगायवे को आनि गही बहियां। चौंकि परी चकि परी औचक उचक परी बक परी जकि परी सक परी नहियां॥ ५४॥

मध्या लक्षण बरवै।

जहां बराबर बरनत लाज मनोज।
मध्या तहां बखानत सु कवि समोज॥ ५५॥

उदाहरण कवित्त ।

ललना लजीली उर कामहूं तें कीली नीली सारी मे लसै ज्यों घटा कारी बीच दामिनी । कहै ब्रजचंद हुती संग मे सहेलिन के हेरत हँसत बरात हंस गामिनी ॥ तौलों तहां गेह में सुनाइ आयो नेह भरो बैठ गयो ताको लखि बैठि गई भामिनी । कंत हेरे साम्हे तब अंत हेरे चंदमुखी अंत हेरे कंत तौ न अंत हेरे कामिनी ॥ ६६

बैठी सीसा सागर मे सुन्दरि सवारही तें मूंदि कै किवार देव छबि सों छकति है । पीत पट लकुट मुकुट बनमाल धरि करि वेष पी को प्रतिविम्ब मे तकति है ॥ ह्वै कर निसंक अति अंक भरि भेटिवे को भुजन पसारति समेटति जकति है । चौंकति चकति चितवति उझकति उर झूमि लचकति मुख चूमि ना सकति है ॥ ६७ ॥

रति विपरीत मे रमति मृगनैनी ताकी बेनी लुरै पीठ सुख देनो अनुमान तें । हिले मुख अलक गिले सो राहु चंद मानो गिरि उठि गिरै निसा पाछे परी प्रान तें ॥ सेवक ललकि लपटाति ना लजीली कैधों नायक जुवा को कसा चलत विधान तें । कैधों भ्रम संभु के कस्यो है कुच कंचुकी मे काढ़िवे को काम बंद काटत कपान तें ॥

अथ प्रौढ़ालक्षण ॥ दोहा ।

निज पति सों रति केलि मे सकल कलान परवीन ।
तासों प्रौढ़ा कहत हैं जे कवित्त रस लीन ॥ ६९ ॥

उदाहरण कवित्त ।

प्रथम समागम के औसर नवेली बाल सकल कलान करि प्यारे को रिझायो है। देखि चतुराई मन सोच भयो पीतम को लखि पर नारि मन संभ्रम भुलायो है॥ कालिदास ताही समै निपट प्रवीन तिया काजर लै भीत ही मे चित्रक बनायो है। व्यात लिखि सिंघिनी निकट गजराज लिख्यो जोनि तें निकरि छौना मस्तक पै आयो है * ॥ ७० ॥

कवित्त ।

प्रीति बस दोऊ विपरीति मे रमे हैं जहां पाय पर घुंघुरू सु मौन सुख लै रहो। कहै पदमाकर त्यों करत कोलाहलनि किंकिनि कतारे काम दुंदुभि से दै रही ॥ छाप सुख प्यारी को बिहारी के सु आनन पै हार जुत

* समस्त रतिकोविदा नायका ने नायक को भ्रमित देख प्रसवती सिंहिनी का बालक गजराज के मस्तक पर लिख कर सूक्ष्मालंकार द्वारा यह जताया कि सिंह अपने स्वभाव ही से गजराज पर आक्रमण करते हैं॥

बारन की आभा ऐन वै रही। तारन के फंद चांप चंद चहुं ओर मान्यो इन्दीवर ऊपर कलिन्दी केलि कै रही॥

रति विपरीत मे रमति मृगनैनी बाल कुन्दन की बेली ऐसी सिसकि सिकुर जात। बेनी कवि कहै विहसति बतराति विज्जु छटा लों छहरि घनस्याम तन दुरि जात॥ मोतिन की लरैं अलकावलि के तरे परे उघर मुख्यो न मुखचंद छवि दुरि जात॥ ससि मानो पीछे डार आड़ी पांति तारन की तमकी जमाति सों उघरि लरि मुरि जात॥ ७२॥

घूंघट जमानिका है कारे २ केस निसि खुटिला जराय जरे दीपक उजारी है॥ बाजत मधुर मृदुबानी सो मृदंग धुनि नैना नट नागर लकुट लट धारी है॥ आलम सु कवि कहै रति विपरीत समे श्रम विन्दु अंजुलि पुहुप भर ढारी है। अधर सुरंग भूमि नृपति अनंग आगे नृत्य करे बेसर की मोती नृत्यकारी है *॥ ७३॥

सवैया।

मानसी पूजा मई पजनेस मलेछन हीन करी ठकु-

* यह बात प्रसिद्ध है कि आलम कवि ने इसी कवित्त के चतुर्थ पद पर रिझ शेख नामक रंगरेज़िन के साथ ब्राह्मण से मुसल्मान हो कर जीवन व्यतीत किया॥

राई। रोके उद्दात सबै सुर गोत बसेरन पै सिकराली ब-साई ॥ जान परै न कला कछु आज की काहे सखी य-जया इक ल्याई। पीछे मराल कहो किहि कारण एरी भु-जंगिनी क्यौं पोसवाई ॥ ७४ ॥

सांझहि तें रति की गति जेतिक कोक के आसन जे गिरा गावति। वारिज नैननि बारहिंबार न चूमिबे के मिस भोर छपावति ॥ केलि कला के तरंगन सों हठि मोहन लाल को ज्यों ललचावति। अंक मे वीति गई रतियां पै तज छतियां तिये छोड़ि न भावति ॥ ७५ ॥

कवित्त ।

साजि व्रज भूषन के भूषन बसन अंग राजी रति रंग संग सुन्दर सुजान के। कहै पदमाकर सुपेच पगरी के खुले टूटे कल कुंडल कपोलन मे कान के ॥ ढरकि क-पोलन तें उरझे उरोजन पै मंजु मकराकृत बड़ेरी मुक-तान के। मानो छल छंदन सों छीन के छपाकर ने सौं-प्यो आन हंस को निसान पंचवान के ॥ ७६ ॥

रैन की उनीदी राधे सोवति सकारे भए झीनो पट तानि परी पायन तें मुख तें। सीस तें उलटि बेनी कंठ ह्वैके उर ह्वैके जानु ह्वै छवान ह्वैके लागी सूधे रुख तें ॥

सुरति समर रति जोबन को महा जोर जीति भगवंत अरसाय राखी सुख तें। हर को हराय मानो माल मधु कारन की राखी है उतार मन चंपा के धनुख तें ॥ ७७ ॥

छप्पय।

राधा २ रमन भवन सूने सुभाग लहि। सुख श्रम छवि छकि नैन सैन करि लई अंक महिं॥ बहुरति २ अंत करी बिपरीति रीत अति। कोक कला कल कलित ललित निद्रत मनोज रति॥ है श्रमित सेज सोए जुगल उपमा यों जिय मे भरी॥ जनु छाजत छीर समुद्र मे जातरूप नीलम छरी॥ ७८॥

सवैया।

परभात लों केलि करी ललना बगरे कच एड़िन लों छहरैं। रस राती उनीदी भई अखियां रद लागे कपोलन में गहरैं॥ दरकी अंगिया मे उरोज लसै लट तापै अजान परे लहरैं। मनो केसर कुंभ के शृंग पै सुन्दर सापिनि के चेटुआ बहरैं॥ ७९॥

रति रंग तें है परजंक पै बाल सु ले रही आरस की लहरैं। दृग लोल में पीक कपोल में अंजन ओठन ओलन में सहरैं॥ पस्यो नीलो निचोल भुजा पै अजान सुलागे समीरन के फहरैं॥ बिधु को करि घायल राहु मनो चल्यो चाहत कुंदन की डहरैं॥ ८०॥

अथ * धीरादि कथनम् ।

दोहा ।

मध्या प्रौढ़ा मान में तीन भांति तिय जानि ।
धीरा और अधीर तिय धीरा धीरा मानि ॥ ८१ ॥

तत्रादौ मध्या धीरा लक्षण ।

कोप जनावे व्यंग सों तजे न पति सनमान ।
मध्या धीरा नायका ताको कहत सुजान ॥ ८२ ॥

उदाहरण—सवैया ।

क्यों घनस्याम अबै दुचिते भए मोतन दीठि करौ सुखदाई ॥ कंज गुलाबन में अरुनाई न लाल गुलालन की सरसाई ॥ तो तन पै जितनो गहरो रंग है रंगरेजन की चतुराई ॥ साची कहो इन नैनन रंग को दीनी कहा तुम लाल रंगाई ॥ ८३ ॥

आवत जात के भौन के भीतर नींद भरो रस्यो बा-

---

* धीरादि भेद और खंडिता में क्या अन्तर है? प्रायः उदाहरण संकर देख पड़ते हैं और जिन से पूछता हूं, यथार्थ उत्तर न दे कर चुपके हो बैठते हैं। मेरी इच्छा थी कि यहां पर कुछ लिखूं किन्तु स्थानाभाव से न हो सका अतएव "अजान हजारा" में सविस्तर लिखता हूं देखिये और अपनी अनुमति प्रकाश कीजिये ॥

लम बाल सों ॥ मान को ठान कियो न सयान सो जान लयो गुर ग्रानन चाल सों ॥ अंजन लीक लगी अधरान में पीक कपोलन जावक भाल सों ॥ आब गुलाब लै सीरो कड्यो मुख लाल को पोंछो सपेद रुमाल सों ॥ ८४ ॥

खंजन हैं मन रंजन के सब रंजन नैन किधौं मति जी की ॥ मीठी सुधा की सुधाधर की दुति दंतन की किधौं दाड़िम ही की ॥ चंद भलो मुख चंद किधौं सखी मूरति काम की कान्ह की नीकी ॥ कोमल पंकज के पद पंकज प्रान पियारो कि मूरति पी की ॥ ८५ ॥

घोर घटा घहरै नभ मंडल तैसिय दामिनि की दुति जागत ॥ धावत धूर भरे धुरवा मुरवा गिरि शृङ्गन पै अनुरागत ॥ फैली नई हरियारी निहारि संजोगिन के हियरा अनुरागत ॥ रीति नई रितु पावस में ब्रजराज लखे रितुराज सों लागत ॥ ८६ ॥

मध्या अधीरा लक्षण—दोहा।

करै अनादर कंत को प्रगट जनावै कोप।
मध्य अधीरा नायका ताहि कहत करि चोप ॥८७॥

उदाहरण कवित्त।

सकल कलान तुम सकल कलान तुम सकल कलान के कला में बने बांके हो। एहो बनमाली तुम बने बनमाली तुम कौन बनमाली माल उर में सुहाके हो ॥ आए

हो रमन तुम आए हो रमन चले जाओ रमनी के ह्यां रमौ ना हियां काके हो। कौन बन ताके तुम कौन बन ताके तुम कौन बन ताके ह्यां सु कौन बनताके हो ॥ ८८ ॥

सवैया।

औरन के ढिग ते न टरौ नित बातन ही हमे राखत टारै। औरन के संग राति बिताय हमे सुख देत हो आनि सकारे ॥ औरन सौं तुम सांचई हो हम सों रहो झूठई ब्योत बिचारे। लागत औरन की छतियाँ तुम यायन लागत आनि हमारे ॥ ८९ ॥

अथ मध्या धीराधीरा लक्षण दोहा।

धीर बचन कहि के जु तिय रोय जनावै रोस।
मध्या धीरा धीर तिय ताहि कहत निरदोस ॥ ९० ॥

उदाहरण कवित्त।

कीजियत प्यारे आज तेरे पर तेरी सौंह तन मन धाम तोपै दीजियत वार वार। कहै पद्माकर सु देख मृगनैनी दृग आंसू भरि आए बिन गुन के निहार हार॥ नैनन तें आंसू ढरि परे ते कपोलन कपोलन ते गिरे ते उरोजन पै बार बार। बड़े बड़े मोती मीन देत रजनीसे रजनीस मनो देत संभु सीस पर ढार ढार ॥ ९१ ॥

अथ प्रौढ़ा धीरा लक्षण दोहा ।

उर उदास रति तें रहै अति आदर की खानि ।
प्रौढ़ा धीरा नायका ताहिं लीजिये जानि ॥

उदाहरण कवित्त ।

जगर मगर दुति दूनी केलि मंदिर में बगर बगर धूप अगर बगाख्यो तू । कहै पद्माकर त्यों चंद ते चटकदार चुम्बन में चारु मुख चंद अनुसाख्यो तू ॥ नैनन में बैनन में सखी और सैनन में जहां देख्यो तहां प्रेम पूरन पसाख्यो तू । कपत कपाए तऊ छल न छबीली अब उर लगिबे की बार हार न उताख्यो तू ॥ ८२ ॥

सवैया ।

बैठी तिया मनि मंदिर में चहुं औरन पुंज प्रभा के पसारे । काम सों स्याम महा अभिराम अनंद सों आय तहां पग धारे ॥ आपने हाथन सों तन में सब साजि के साज सिंगार सिंगारे । सुन्दरि आज नई छल में इक ईछन तीछन ते न निहारे ॥ ८३ ॥

अथ प्रौढ़ा अधीरा लक्षण दोहा ।

डर दै के पिय को तिया देइ सुमन की मारु ।
प्रौढ़ अधीरा कहत हैं ताहि सु कवि मति चारु ॥८४॥

उदाहरण कवित्त ।

जाके अंग अंग की निकाई निरखत आली वारने अनंग की निकाई कीजियतु है। कहै मतिराम जाकी चाह व्रज नारिन को देह अंसुवान के प्रवाह भीजियतु है ॥ जाके बिन देखे न परत कल तुमहूं को जाके बैन सुनत सुधा सो पीजियतु है। ऐसे सुकुमार पिय नंद के कुमार को यों फूलन के मालन की मार दीजियतु है ॥८५॥

दोहा ।

तेह तरेरे दृग नहीं राखति क्यों न अगोट।
छैल छबीले पै कहा करति कमल की चोट ॥ ८६ ॥

अथ प्रौढ़ा धीराधीरा लक्षण ।

रति तें रूखी ह्वै जहां डर जु दिखावै बाम।
प्रौढ़ा धीराधीर तिय ताहि कहत रस धाम ॥ ८७ ॥

कवित्त ।

छवि छलकन भरी पीक पलकन त्योंहीं श्रम जलकन अलकन अधिकाने वै। कहै पद्माकर सुजान रूप खान तिया ताकि ताकि रही ताहि आप ही अजाने ह्वै ॥ परसत गात मन भावन के भावती की गई चढ़ि भौंहें रही ऐसी उपमाने छ्वै। मानो अरबिन्दन पै चंद को चढ़ाय दीनी मान कमनैत बिन रोदा की कमाने द्वै ॥ ८८ ॥

अथ जेष्ठा कनिष्ठा लक्षण दोहा।

बरनत जेष्ठ कनिष्ठिका जहं ब्याही तिय दोय।
पिय प्यारी जेष्ठा कही अन प्यारी लघु सोय॥ ९९॥

उदाहरण कवित्त।

एक पलिका पै बैठी सुन्दरि सलोनी दोऊ चाहि के छबीलो छैल आयो रति केलि घर। चिन्तामनि कहै आन बैठी ढिग पीतम पै काहू सों कछू न कहि सकत दुहूं के डर॥ सुख के दिखायबे को एक को दिखायो नाह विपरीत रति को सरूप लिखि चित्र पर। जौ लौं एक सकुचन आंख मूंदि रही तौ लौं प्यारे प्रान प्यारी के कुचन पर राख्यो कर॥ १००॥

सवैया।

चौपर खेलती दोऊ दुरे तहां आयगो लंगर सूधे सुभाय के। हारहिं सों मिले आपहि यों ठहराइ हराइ दई सुख पाय के॥ जीत के जोम भरी हंसि एक रही इक बैसि यों बैठ लजाय के। काहू को नेक न संक करी भरी अंक मयंकमुखी सुख पाय के॥ १०१॥

इति स्वकीया।

अथ परकीया लक्षण दोहा।

दुरे दुरे पर पुरुष सों सुन्दर करै जु प्रीति।
बुद्धि चतुरई चौगुनी परकीया की रीति॥ १०२॥

उदाहरण कवित्त ।

पुरजन परम परोसिनी परोस सबै जानत हैं सील सदा सुद्ध सुचिता की खान । परमानंद जेते गुरु गोकुल बसैया तेते बसत न जाने कहूं ऐसी समै सुखदान ॥ घूंघट के घेर चहुं फेर तें तिरीछी हेर नजर धरा पै अधरा पै मंद मुसकान । जानत हैं केल खेल केवल कदंब पुंज कीर धीर केकी औ कपोत पोत कोकिलान ॥ १०३ ॥

अथ अनूढ़ादि लक्षण दोहा ।

अन व्याही तिय होति जहँ सरस पुरुष रस लीन ।
ताहि अनूढ़ा कहत हैं कवि कोविद परवीन ॥ १०४ ॥
जो व्याही तिय और की करति और सों प्रीति ।
ऊढ़ा तासों कहत हैं हिये राखि रस रीति ॥ १०५ ॥

तत्रादौ अनूढ़ा का उदाहरण सवैया ।

प्रीति पतिव्रत सों बल बैर कहो केहि भांति भटू भ्रम भागै । काज सरै तो लजाति हों लाजन लाज सरै तौ बिदा हित मागै ॥ ह्वै रही सांप छछून्दर की गति * काम

* लोक में यह बात प्रसिद्ध है कि यदि सर्प छछून्दर को निगल जाय तो मृत्यु को प्राप्त हो और छोड़ दे तो अन्धा हो जाय ॥

अकाम हिये अनुरागै। ऐसी उपाय बताय सखी हरि अंक लगै पै कलंक न लागै॥ १०६॥

न्हाय बड़े तरकै भर के जल फूलन के चुनि के पुनि ढेरी। त्यों पद्माकर मंत्र मनोहर जै जगदंब अदंब अये री॥ या उर धार कुमारपनै भरि पावन पूजा करी बहु-तेरी। चेरी गोविन्द के पायन की कर ए गुनगोरि † गोसाइन मेरी॥ १०७॥

वा बन बाग़ की मालिन ह्वै पहिरावहुं माल बिसाल घनेरी। त्यों पद्माकर पान खवावहुं खासी खवासिन ह्वै मुख हेरी॥ श्री नंद नंद गोविन्द गुनाकर के घर की क्यों कहावहुं चेरी। दै बरदान यहै हम को सुन ए गुनगोरि गोसाइन मेरी॥ १०८॥

बांसुरी ह्वै लगों मोहन के मुख माल ह्वै कंठ तजों नहिं फेरी॥ त्यों पद्माकर ह्वै लकुटी रहों कान्हर के कर घूम घनेरी। पीत पटी ह्वै कटी लपटों घट तें न घटै चित चाह जु एरी॥ दै बरदान यहै हम को सुन ए गुन-गोरि गोसाइन मेरी॥ १०९॥

† जयपुर प्रान्त के ढूंढार स्थान में मधु मास में गुन-गोरि देवी का बड़ा भारी मेला होता है जहां पर घर २ की स्त्रियां पूजन के लिये जाती हैं॥

अथ ऊढ़ा उदाहरण—कवित्त।

सूखी सी भ्रमी सी भ्रमी व्याकुल सी बैठी कहूं नजर लगी है हन तोरि तोरि नाख्यो मैं॥ बेनी कवि भोरही तें भौंरी भई डोलति हौं राज करी जाय यह काज अभिलाख्यो मैं॥ ललकै हमारो जीय बोले ना बिलोके क्योंहूं मुख आखें मूंदि रही यातें दीन भाख्यो मैं॥ पलकें उघारीं कैसे कढ़ि जाय आंखिन तें सोर ना करोरी चितचोर मूंदि राख्यो मैं॥ ११०॥

घर घर घाटन में बाटन में कुंजन में कहे रूप गुंजो अनरूप कहा डोलों मैं॥ बेनी कवि गातन में बस्यो गोदना के मिस रिस करि बातन में कहा कहा कोलों मैं॥ मसकि मसूसन सों मारों मन कोलों कोऊ हितू ना हमारो जासो बिलग न बोलों मैं॥ मूदौं स्याम पूतरी उघारि देखौं सांवरो मैं मेरो अपराध आंख मूदौं किन खोलों मैं॥ १११॥

अँखिया हमारी दई मारी सुधि बुधि हारी मोहूं तें जु न्यारी रहत रहै सब काल में॥ कौन गहै ज्ञाने काहि सौंपति सयाने कौन लोक लीक जानै ये नहीं हैं निज हाल में॥ प्रेमपगि रही माया मोह में उमगि रही ठीक ठगि रही लगि रही बनमाल में॥ लाज कों अचै के कुल धरम पचै के विथा वृन्दन संचै के भई मगन गोपाल में॥

एही हियहार के कदीम दरवान दोई इन की छपाय काहू जपरी लयो है री। मैं तो इन द्रोहिन के पहरे रही थी सोइ बारी खेत खायो बड़ो उलट भयो है री॥ ठाकुर कहत बूझे आंसू भर भर देत तनिक न सोध देत कौन को दयो है री॥ मेरो मन मेरी आली मोहि यह जान परी दृग बटपारन के भेद में गयो है री॥ ११३॥

लागे काम तीर है री महावर तीर हैरी प्यारो नाहिं तीर हैरी कैसी करतो रहै॥ अंग अंग पीर है री बिरह तपी रहै री आंखें आंसू पीर हैरी न्यारो जाको पी रहै॥ बातें जो कही रहै री सुमिरत ही रहै री वे तो कतहीं रहै री चख्यो चितही रहै॥ कौन बरजी रहै री कौन बर-जी रहै री कौन बरजी रहै री कौन बरजी रहै॥ ११४॥

सवैया।

गोकुल के कुल को तजि के भजि के बन बीथिन में बढ़ि जैये॥ त्यों पदमाकर कुंजकछार बिहार पहारन में चढ़ि जैये॥ है नँद नंद गोबिन्द जहां तहां नंद के मंदिर में मढ़ि जैये॥ यों चित चाहत एरी भटू मन मोहने ले के कहूं कढ़ि जैये॥ ११५॥

—***—

अथ षट् बिधि परकीया कथनम्—दोहा।

इक परकीया की कही षट् बिधि भेद बखान।

प्रथमहि गुप्ता जानिये बहुरि विदग्धा मान ॥ ११६ ॥
ललित लच्छिता तीसरी चौथी कुलटा होय ॥
पँचईं मुदिता खष्टईं है अनुसयना सोय ॥ ११७ ॥

त्रिविधि गुप्ता ।

गुप्त सुरति गोपन करै भयो होयगो होत ।
गुप्ता ताको कहत हैं सबरे सुमति उदोत ॥ ११८ ॥

अथ भूत सुरति गोपना का उदाहरण—कवित्त ।

जैहों नहिं गोकुल सुनोरी दधि बेचन को सांकरी गली में आली कैयो ठौर भटकी ॥ भनै जबरेस आयो नंद को किसोर जहां छलिया छबीलो छैल जानै घट घट की ॥ चूनर को झटकी सु कैयो ठौर लटकी सु सासु मेरी हटकी खेलाई कला नट की ॥ भूलगई बट की रही ना कछू अटकी सु फोर डारी मटकी बजावै बीर चटकी ॥ ११९ ॥

मोतिन की माल तोरि चीर सब चीर डार्यो फेर नहीं जैयों आली दुख विकरारे हैं ॥ देवकी नन्दन कहै धोखे नाग छौनन के अलकैं प्रसून तंज नीच निरवारे हैं ॥ जान मुखचंद कला चोंच दीनी अधरन तीनो ये निकुंजन में एके तार तारे हैं ॥ ठौर ठौर डोलत मराल मतवारे तैसे मोर मतवारे त्यों चकोर मतवारे हैं ॥ १२० ॥

मोहि लखि सोवत बिथोरिगो सु बेनी बनी तोरिगो हिये को हरा छोरिगो सुगैया * को ; कहै पद्माकर त्यों घोरिगो घनेरो दुख बोरिगो बिसासी आज लाजही की नैया को ॥ अहित अनेसो ऐसो कौन उपहास यहै सोचति खरी में परी जोवति जुन्हैया को ॥ बूझेंगी चबैया तब कैहों कहा दैया इत पारिगो को मैया मेरी सेज पै कन्हैया को ॥ १२१ ॥

सवैया ।

परि पूरन प्रेम तें पूजि सिवा प्रति जाम पतिव्रत पालती हैं ॥ निसबासर ध्यान धरे तिन को मन तें तन न हालती हैं ॥ सरदार निबाहनहार वही हम कौन नेक कला लखि लालती हैं ॥ ननदी ये तिहारो सदा बतियां नटसाल लों साहब सालती हैं ॥ १२२ ॥

दीनो बुलाय जबै उन मोकहं गांव तबै का सबै बहरोतो ॥ नंद हते औ हतीं जसुदा दरकुम्न जुरी सिगरो अहरोतो ॥ मंचित साख हती तुमहूं हमहूं जब ज्वाब दियो छहरोतो ॥ घेर घराघर माचो फिरै सखी मैंन इराहर को पहरोति ॥ १२३ ॥

* सुगैया—कांचुकी ।

अथ भविष्यगुप्ता का उदाहरण—कवित्त ।

आज तें न जैहों दधि बेचन दोहाई खाउं भैया की कन्हैया उतै ठाढ़ोई रहत है ॥ कहै पद्माकर त्यों सांकरी गली है अति इत उत भाजिबे को दांव न लहत है ॥ दौर दधि दान काज ऐसो अमनैक तहां आली बनमाली आय बहियां गहत है ॥ भादों सुदी चौथ को लख्यो री मृग अंक यातें झूठहू कलंक मोहि लागिबो चहत है ॥

सवैया ।

आवति याहि खेलाइबे को नित सूने बिसूने न नेक सकाति हौं ॥ कोहभरी बतियांनहीं सों यह कोहारा मोल लयो सब भांति हौं ॥ टूटे हरा करा छूटे सबै पै तऊ सुख लूटत हौं न अघाति हौं ॥ देखत हैत हिया न खरोट पै आंखिन ओट भए मरि जाति हौं ॥ १२५ ॥

निज काज करैं अपने मन को तनिको न दया उर धारती हैं ॥ गिरि सों गिरि आनि मिलावती फेर उपाय के बीचहि पारती हैं ॥ मिलि चौंचदहाई चवाइन ये कुलकानि न नेक निहारती हैं ॥ इन सों न उपाय चलै कबहूं पढ़ि मोहनी मंत्र सो डारती हैं ॥ १२६ ॥

सारो सुवानि पढ़ावन को सब को मन मोहि को ठेलि पठैये ॥ पास गए पिंजरान के सुन्दर कौतुक होत

सो कांहि देखैये ॥ भोरे अनार के बीजन के मेरे मानिक मोतिन को मुंह नैये ॥ तीछन चोंच के चोटन सों तन चोंथई लेत जबै ढिग ऐये ॥ १२७ ॥

अथ वर्तमान गुप्ता का उदाहरण—कवित्त।

छूट जाय गैया कै बिलैया चाट चाट जाय कौन दुखदैया दैया सोच उर धार्‌यो मैं ॥ हौं ही जमवैया औ धरैया निज सैया तरे कहौं जो कहैया हास होयगो बिचार्‌यो मैं ॥ ग्वाल कवि हौले को अवैया निरदैया यही आज या समैया ओट पैया गहि पार्‌यो मैं ॥ भैया को बुलायो या कन्हैया को करैगो हाल दधि को चोरैया मैया पकरि पछार्‌यो मैं ॥ १२८ ॥

आन तें न आयो यही गांवरे को जायो माई बापुरे जिवायो प्याय दूध वारे वारे को ॥ रसखान सो तो पह-चानियो न मानत है लोचन लजैया औ नचैया द्वारे द्वारे को ॥ बछा की सौं सोच कछू मटुकी उतारे को न गोरस के ढारे को न चीर चीर डारे को ॥ यहै दुख भारी गहै डगर हमारी मांझ नगर हमारे ग्वार बगर हमारे को ॥

सवैया।

याही तें नीके परोस बसें सब अन्त परोसई होत सहाई ॥ आली है सौतिन तो रसवादीनी जानति है नहीं पीर पराई ॥ कान्ह उठाय लियो मुहिं दौरि कह।

कहिये कविराम बड़ाई ॥ बैठि गई सुधि नेक रही नहीं ऐसी कछू मुहिं घूमरी आई ॥ १३० ॥

अथ द्वितीय भेद—विदग्धा कथनम् दोहा ।

द्विविध विदग्धा जानिये बचन विदग्धा एक ।
क्रयाविदग्धा दूसरी भाखा विदित विवेक ॥
बचनन की रचनान तें जो साधे निज काज ।
बचन विदग्धा नायका ताहि कहत कविराज ॥१३१॥
जो तिय साधे काज निज करि कछु क्रया सुजान ।
क्रयाविदग्धा नायका ताहि लीजिये जान ॥ १३२ ॥

बचन विदग्धा * का उदाहरण ।

हौं तो आज घर तें निकरि कर दोहनी लै खरक गही तो जान औसर दुहारी को । दूरि रह्यो गेह उनै आयो अति मेह महा सोच है रसाल नई चूनरी की सारी को ॥ छाहा रंग राखि लीजे ढील जिन कीजे लाल ऐसो नहिं पैहो हाथ औसर अवारी को । आनि के छिपैये सुन कुंवर कन्हैया देया कहा घटि जैहै कारी कामरी तिहारी को ॥ १३३ ॥

चूमौं कर कंज मंजु अमल अनूप तेरे रूप के निधान

---

* बचन विदग्धा और स्वयं दूतिका में क्या अन्तर है ? हजारा देखिये ।

कान्ह मो तन निहारि दै। कालिदास कहै हंस हेर मेरे पास हरि माथे धर मुकुट लकुट कर डार दै॥ कुंवर कन्हैया मुखचंद की जुन्हैया चारु लोचन चकोरन के प्यास निरवार दै। मेरे कर मेहंदी लगी है नदनन्द प्यारे लट उरझी है नेक बेसर सुधार दै॥ १३४॥

तोरत फूल कलीन नवीन गिरो मुंदरी को कहूं नग मेरो। संग की हारी हेराय गोपाल गई अरसाय डराय अंधेरो॥ सासति सासु की जाय सकों न अहो छिन एक न गैयन फेरो। कुंजबिहारी तिहारी थली यह जात उजारी दया करि हेरो॥ १३५॥

कवित्त।

तीर है न बीर कोऊ करै ना समीर धीर बाढ़ो श्रम नीर मेरो रह्यो ना उपाव रे। पंखा है न पास एक आस तेरे आवन की सावन की रैन मोहि मरत जिआव रे॥ संगम मैं खोलि राखी खिरकी तिहारे हेत होति हौं अचेत तन तपन बुझाव रे। जान जात जान क्यों न कीजिये उताल गौन पौन मीत मेरे भौन मन्द मन्द आव रे॥ १३६॥

झिलत झकोर रहै जोवन को जोर रहै समद मरोर रहै सोर रहै तब सों। कहै पदमाकर तकैयन के मेह रहै मेह रहै नैनन म न देह रहै दब सों॥ बाजत सु बैन रहै

उनमद मैन रहै चित में न चैन रहै चातकी के रव सों। गेह में न नाथ रहै हारि ब्रजनाथ रहै कौलौं मन हाथ रहै साथ रहै सब सों॥ १३७॥

सवैया।

भौन में जान न देति बहै बिन बातन देन लगैं कर-तालैं। देखि सुभाव परोसिन को सु नजीक न आय सकैं पर बालैं॥ बोलति धोल कुबोल सबै नट साल से ते उर में अति सालैं। जाति रही ननदी जब तें तब तें लगी सासु चवाव के चालैं॥ १३८॥

सिगरी निसि जागति जाति सदा पल सों पल लागत नाइन के। घर ही रहिये अब का कहिये गुनिये गुन सौति सवाइन के। हमरे नहिं पीतम होत सगे लगे बातन लोग लुगाइन के। किहि के बल उत्तर दीजै उन्हे सो सुनै बनै चोज चवाइन के॥ १३९॥

दोहा।

कनक लता औ फल फरी रही विजन बन फूल।
ताहि तजत क्यों बावरे अरे मधुप मति भूल॥१४०॥

अथ क्रिया विग्धा का उदाहरण कवित्त।

सखी सुख दैन स्याम सुन्दर कमलनैन मिस के सुनाए बैन देखि दुरजन में। सेनापति पीतम की सुनत सुधा सी बैन उठि धाई बाम धाम काम छाड़ि छन में॥ छबि

कैसी छटा काम बन कैसी घटा आई झांकि चढ़ि अटा पागी जोबन मदन में। तजि सीस बसन सुधारिबे को मिस करि कीनो पायलागन सो लागरही मन में ॥१४१॥

बंजुल निकुंजन में मंजुल महल मध्य मोतिन की झालरें किनारिन में कुरबिन्द। आयगी तहांई पदमाकर पियारे कान्ह आनि जुरे चोवंई चवाइन के वृन्द वृन्द॥ बैठी फेर पूतरी अनूतरी फिरंग कैसी पीठ दै प्रवीनी दृग दृगन मिली अनिन्द। आछे अवलोकि रही आदरस मंदिर में इन्दी वर सुन्दर गोविन्द को मुखारबिन्द ॥ १४२ ॥

सवैया।

बैठी हुती वृषभान कुमारि सखीन की मंडली मंडि प्रवीनी। लै कुंभिलानो सो कंज परी इक पायन आय गुवालि नवीनी॥ चंदन सों छिरकी वह वाकहं पान दई करुना रस भीनी। चंदन चित्र कपोलन लोप कै अंजन आंजि बिदा कर दीनी॥ १४३॥

मंदिर मंद अनंद ह्वै सुन्दरि जात हुती अपने कहुं नातें। आगे सबै गुरु नारि खरीं हंस ये हरि बात कही इक घातें॥ हाथ उठाय हनी छतियां मुसकाय कै जीभ गही पुनि दांतें। बैनन में कह्यो ए जगदीस कि सैनन में कही जाहु यहां तें॥ १४४॥

दोऊ अटान चढ़े पदमाकर देखे दुहूं के दुओ छबि छाई। त्यों ब्रजबालें गुपाल तहां बनमाल तमालहि की दरसाई॥ चंदमुखी चतुराई करी तब ऐसी कछू अपने मन भाई। अंचल ऐंचि उरोजन तें नंदलाल को मालती माल दिखाई॥ १४५॥

तृतीय भेद लक्षिता * लक्षण दोहा।

होत लखाई सखिन सों जाको पिय सों प्रेम।
ताहि लच्छिता कहत हैं कवि पंडित करि नेम॥१४६॥

उदाहरण कवित्त।

खेलो रंग रावटी छबीली छाहं छाजनं की कैसी अंगनाई हेम हीरन हिसाब की। चांदनी चंदोवन दिवार दरपीसन में देहरी दुआरन दुलीचन के दाव की॥ बैठी रहो राधे घनस्याम इन आंखिन पै पलंग बिछाय सेज सुखमा सबाब की। धाइ धाइ जाय बलि जाय जिन बागन में जैहै गड़ि पांयन मैं पांखुरी गुलाब की॥१४७॥

सीस सारी सकुरति अलकैं मुकर रही झलक कपोलन अनूप छबि छाई है। बदन बदलि गयो खौर सिर

---

* रस मंजरी कार तथा अपर ग्रंथकारों ने परकीया का लक्षण यह लिखा है। "अप्रकाट परपुरुषानुरागा परकीया" सो लक्षिता में अप्रकाट अनुराग कहां है?

चंदन की अंजन की रेख देख बिथुर सोहाई है ॥ देव ओ सोहाग भाग अनुराग उमगत कंचुकी दुहर कैसे दुरत दुराई है । कवि रति रंग मन मोहन सौं साधे राधे आज मधुबन तें बिहान हौत आई है ॥ १४८ ॥

सवैया ।

तू इत जोबन रूप भरी उतह्न मन लाल को लाल चहा है । तेंऊ कछू बिनती सी करी उनहूं बड़ो बैर लौं खाई हहा है ॥ देखि दुहूं को दुहूं पर प्यार भयो जिय में सुख मोहिं महा है । प्रीति बढ़ै दिन ह्वौं दिन दून दुरावती काहे को हौत कहा है ॥ १४६ ॥

आज सखी रसखान के ख्याल में मालती माल उतार लई री । मिबियै जान के सूंघी सबै चुप ह्वै गई काह्न न कौन खई री ॥ भावते मैंद को बास लखे ननदी पहचानि प्रचंड भई री । मैं लखि वे रस की बतियां मुसकाय न-चाय लचाय लई री ॥ १५० ॥

चतुर्थ भेद कुलटा लच्छण दोहा ।

जो बहु लोगन सौं तिया राखति रति की चाह ।
कुलटा ताको कहत हैं कोविद सदा उछाह ॥ १५१ ॥

उदाहरण सवैया ।

गैल में छैलन आवत जानि के झांकि झरोखन रीझ

रिझावै। चंचल अंचल डारि रहै अंगिराय अनूप सरूप दिखावै। मोहति है सुरि कै मुसकान में कोयल ज्यों कल बैन सुनावै। लाइ टिको ललचाय चितै अट की नट की गति मैन चलावै॥ १५२॥

आंगी कसै उकसै कुच ऊंचे हंसे हुलसै फुफुतीन की फूंदै। चंदन चोट करै पिय जोट पै अंचल ओट दृगंचल मूंदै॥ देव जू कुंकुम केसर कामक बारिज बीच बिराजति बूंदै। बाढ़ो बिनोद गुलाल लै गोदन मोद भरी चहुं कोदन कूदै॥ १५३॥

जोबन के मदमाती ह्वै ऐंड़ि कै सुन्दर बेसर टीको बनाए। चूंदरियां चटकीली छबीली की केसरियां चित लेत चुराए॥ ठाढ़े पयोधर जेहर गाढ़ी हंसे हरि हेर घनी छबि पाए। नैन नचाये चले नटुआ से अंगूठन ऐंठ अनौठ उठाए॥ १५४॥

कोमल कंज से पायन जावक अंग घनो घनसार लगावै। हाथन में मेहंदी मुख पान लिलार में आड़ महा मन भावै॥ अच्छन अंजन चीर प्रवीन चितै चहुं ओर खरे मग धावै। या छबि सों निकरै तरुनी सब रे निज गांव के छैल रिझावै॥ १५५॥

पंचम भेद मुदिता लक्षण दोहा।

सुनत लखत चित चाह की बात घात अभिराम।

मुदित होय जो नायका ताको मुदिता नाम ॥ १५६ ॥

उदाहरण कवित्त ।

माइका के बिरह मयंक मुखी दुखी देखि भेद ताको सासुरे के मालिन बतायो है। मो पै ठकुराइन हुकुम करि बोई करो खिजमत करिबो हमारे बाट आयो है ॥ भौन में तिहारे बाग ताको होंहीं सेवती हों तामे तहखानो सूनो अति ही सोहायो है। ताको कोठरीन की अंधारी भारी सुन के सु दुलही दुलारी को महारी मोद छायो है ॥ १५७ ॥

वृन्दावन वीथिन बिलोकन गई ही जहां राजत रसाल वन ताल औ तमाल को। कहै पदमाकर निहारत बन्योई तहां नेहिन को नेम प्रेम अदभुत ख्याल को ॥ दूनो दूनो बाढ़त सु पूनो की निसा में अहो आनद अनूप रूप काहू ब्रज बाल को। कुंज तें कहूं को सुनि कंत को गमन लखि आमगन तैसो मन हरन गोपाल को ॥ १५८ ॥

सवैया ।

ग्रीषम की निसि फूलन को परवीन तिया परजंक बिछायो। चंदन चारु उसीर के नीरन चातुरे चौक सबै छिरकायो ॥ आय कहूं तें सयानी सखी निरसंक ह्वै जो

परजंक उठायो । भौंहन फेरि तरेरि सु नैन सखी तन हेरि हिये सुख पायो ॥ १५८ ॥

सांधि प्यारी मनि मंदिर में रंग रावटी पीय नवीन बनाई । चित्र बिचित्र लिखे बहु भांतिन देखे लगी सब काल सुहाई ॥ द्वार निहार पछीत के भीत में टेर सखी सुख बात सुनाई । सौ गुनी फूल हिये महं राखि चितेरिन चौगुनी रीझ दिखाई ॥ १६० ॥

दोहा ।

परखि प्रेमबस परपुरुष हरखि रही मन मैन ।
तौ लगि झपि आई घटा अधिक अंधेरी रैन ॥ १६१ ॥

छठवां भेद अनुसयना लक्षण ।

कही सु अनुसयना त्रिबिध प्रथम भेद यह जान ।
बर्तमान संकेत के विघटन तें सुख हान ॥ १६२ ॥
होनहार संकेत को धरि अभाव उर माहिं ।
दुखित होय सो दूसरी कहत सु अनुसयनाहिं ॥ १६३ ॥
जो तिय सुरत संकेत को रमन गमन अनुमान ।
व्याकुल होय सु तीसरी अनुसयना पहचान ॥ १६४ ॥

नष्ट संकेतानुसयना का उदाहरण कवित्त ।

आई रितु पावस प्रकास आठो दिसन में सोहत सरूप जलधरन की भीर को । मतिराम सु कवि कदंबन की

बास जुत सरस बढ़ावै रस परस समीर को । भौन तें निकरि वृषभान की कुवंरि देख्यो ता समै सहेट की निकुंज गियो तीर को । नागरि के नैनन तें नीर को प्रवाह बढ्यो निरखि प्रवाह बढ्यो जमुना के नीर को ॥ १६५ ॥

भयो पतिझार पतिझार में उबरि गयी हती जौन केलिकुंज कालिंदी किनारा में ॥ कहै गिरिधारी सो बिलोकते बिहाल भई बाल थहरानी मुकुताहल ज्यों थारा में ॥ छीटदार कंचुकी कलित कुच कोरन में सुखमा बढ़ी यों ताकी उपमा बिचारा मैं ॥ डारे मेघडम्बर बघम्बर अनूप मानो संभु के सरूप है अन्हात छिव धारा मैं ॥१६६॥

मानती न मालिन कहे ते क्यों न मेरी बात काहे को लतानन की लौंदें झकझोरती ॥ कहै सिरताज फुलवारी की बहार देखि करि अनुराग अनमोले सुख रोदती ॥ फूले री गुलाव गुलदावदी गहबदार बेला औ चमेलिन की बेलिन बिथोरती ॥ कारण कहा है इन मालिन को बाग बीच नाहक प्रसून ये अनारन को तोरती ॥ १६७ ॥

सवैया ।

एक तो भौन महा अति सांकरो दूसरो लोगन को है भराभर ॥ तीसरो और बड़ो दुख या परछांई करै

घनोघेर घराघर । कासों कहों मैं हिये की बिथा कथा और सुनो सब भांति निरादर ॥ पीतम को मिलनो सज-नी भयो पास को बास बिदेस बराबर ॥ १६८ ॥

जरि जाती रजायत जखन के गिरि जाती सुनै सन की बतियां ॥ हरियारी सु क्यों रहती हिजदेव सुने हन सूखन की बतियां ॥ रहजाती सु क्यों वह प्रीतिलता स-हिजाती व्यथा कबधों छतियां ॥ पति राखती जो न दया करिके यह पूरी पलासन की पतियां ॥ १६९ ॥

द्वितीयानुसयना का उदाहरण—कवित्त ।

बिचकित बल्लिका की माधुरी की मल्लिका की एला की लवंग की ललित न्यारी क्यारी है ॥ चंपक की चंदन की मौलसिरी वृन्दन की बलित लतान सों मिलत साख सारी है ॥ भनत कविन्द मत खेद करै मृगनैनी तेरे हेत लीनी हम पवरि अगारी है ॥ गह गह गुलबारी और सुन्दर गुलाबबारी तेरे सासुरे में सुनी कैसी फुलवारी है ॥१७०॥

कूलन कलिन्दी केल फूलन के बाग गजराज राज हंस बंस थिरता धरत हैं ॥ तीछन बिसारे तेज मंद होत बानन के मदन कमानन के गोसा उतरत है ॥ कहै ह-रिदास धुनिधारी सब मौन होत चक्र चकवाकन के बाल बिचरत हैं ॥ मंद होत मुकुर मुचंदजोति मंद अरबिन्दन तें बुन्द मकरन्द के झरत हैं ॥ १७१ ॥

सवैया ।

सूख सौनारिन नारिन जान अनारिन सों पहिरावति पैरन ॥ मालिन माल बिचार तकी जकी आप लगी सरदार निबेरन ॥ चित्रिनि चित्र देखावत ही चित हारि रही न कही कर फेरन ॥ नाइन पाइन जावक देत लगी ठकुराइन को मुख हेरन ॥ १७२ ॥

सासुरे तें चलि बाहिर बाग बिलोकतहीं अखियां भरि आई । जानतिही जु सखी जिय की तिन कान मे आन तहीं समुझाई ॥ देखे बिना पहिले ही भली रति केलि को ठौर पिया पछिताई । जाति जहां हो तहां पुनि सुन्दर मंदिर सूने बनी अमराई ॥ १७३ ॥

बाल के हाल बिलोकि बिलोकि सखी बिलखै न लखै चित चाइन । जानि गई धनि के मन की छल सो थल केलि दियो कहि नाइन ॥ जो पति हार घनी मेहंदी तो कहा तिहि दीजिये जावक पायन । सासुरे जात भई दुचिती सुचिती कब होहुगी मेरी गोसाइन ॥

तृतीया अनुसयना का उदाहरण ॥ कवित्त ।

बैठी अलि आलिन सो मानिक महल मध्य अंग अलबेली को अचानक धरक पर्यो । कहै पदमाकर तहांई तन तापन तें हारन ते मुकुता हजारन दरकि पर्यो ॥ बाल छतिया तें थक थक ना कढ़त मुख बक ना कढ़त

कर ककना सरकि पखो। पांसुरी पकरि रही सांसुरी संभारे कौन बांसुरी बजत आंखु आंसुरी ढरक पखो ॥

सांझ सरसीरुह से बदन विराजै राजे भोर को मयंक जाहि पटतर लेखे तें। रोम तन छाजे खेद बुन्द के विराजे कन मुकुत पजाए जनु हैमका विसेखे तें ॥ गरो भरो खरो बने बोलत न बोली अरु चोली गई भींज अंसुवान अब देखे तें। लचकी नवेली वा चमेली कैसी लौंद लाल कर मे चमेली की नवेली लौंद देखे तें ॥ १७६ ॥

सवैया।

देखति हौं यह कैसी गिरी अरु आय गयो मुख ऊपर फेन है। जाने कहा उठि दौरी सबै कहै कोऊ लग्यो कै जग्यो उर मैन है ॥ बूझि परी है विथा अब तो जब आप वराय भयो कछु चैन है। याहि मनो लगि जाति है गांसी विसासी कहूं जो बजावत बैन है ॥ १७७ ॥

इति परकीया अथ सामान्या ॥ दोहा।

करति प्रेम जो सबहि सों इक धनहीं के हेत।
गनिका ताको कहत हैं जे कवि कला निकेत ॥
तीन भेद तामे कहैं प्रथम स्वतंत्रा जान।
जननी आधीना कही बहुरि नियमिता आन ॥

बरवै।

आप होय बस धन हित जो पति संग ।
ताहि स्वतंत्रा भाखत बुद्धिउतंग ॥ १७८ ॥
जन अधीन धन चाहै जो पति प्रीति ।
जन आधीना भाखत सुकवि सप्रीति ॥ १७६ ॥
बैठि रहै पति घर मे धन हित बाल ।
नियमा ताहि बखानत सुकवि रसाल ॥ १८० ॥

क्रमशः उदाहरण कवित्त।

गेंदा गुलाद्वदी गुलाबन के पुंज मंजु कंज कुंद कोमल कुमोदिनी कलित केर। जाही जुही मालती चमेली गन अनगन वाटिका सघन बन उपवन चारो फेर॥ कहै परताप और तोसी है पियारी कौन तातें लखि तोहि हठि राखी है हिये निवेर। और फूल सूल सम लागत निहारे मोहि माधवी मधुर फूल आली क्यों न लावै हेर ॥ १८१ ॥

सवैया।

आठहू जाम खड़ी रहै धाम करै व्यभिचार कथा लरजै ना। ठाढ़ी भई है बसीठहू काहू की मानति ईठ कछू अरजै ना॥ सूरत आन के मेरे लिये करनेस जू ल्यावति मो गरजै ना। या व्रज गांव बसै सुभ ठांव सु कौज चितेरिन को बरजै ना॥ १८२ ॥

रूप अनूप सोहात नयो परभात सों जोबन रूप उजेरो। कंचन से तन भूखन भूखित गीत कला गुन ग्यान घनेरो॥ सील सुभाय सयानप एक सिरै सबतें तुहि मे हिय हेरो। हीकर मोद खुसी कर पीय को मंत्र बसीकर सीकर तेरो॥ १८३॥

इति सामान्या *अथ पूर्वप्रकाशितान्तर्गत अन्यसुरतिदुःखिता, वक्रोक्तिगर्विता और मानिनी कथन॥ दोहा।

प्रथम कही जे नायका ते सब तीन प्रकार।
अन्यसुरतिदुखिता सुइक मानवती पुनि नार॥
पुनि वक्रोकति गर्विता इहि विधि भिन्न प्रकार।
इनके लच्छण लच्छ सब भाखत मति अनुसार॥१८४॥
प्रीतम प्रीति प्रतीत जो और तिया तन पाय।
दुखित होय सो दुःखिता बरनत कवि समुदाय॥
करै ईरषा तें जु तिय मन भावन तें मान।
ताहि मानिनी कहत हैं कविजन परम सुजान॥
निज नायक के प्रेम को जो तिय करै गुमान।
प्रेमगर्विता नायका ताको कहत सुजान॥१८५॥

---

* जैसे स्वकीया मे धीरादि और अवस्था भेद वर्णन किया है तैसे परकीया सामान्या में क्यों नहीं ?

जाको अपने रूप को अतिही होय गुमान ।
रूपगर्विता कहत हैं ताको सुमति निधान ॥

अथ अन्यसुरतिदुःखिता + का—उदाहरण ।

चाख्यो वै पियूख अभिलाख्यो कै अनंद उर भाख्यो ना बनत ईस ओर जो कपट में ॥ धरत कहूं को पाय परत कहूं को जाय करत कला तू भाय जैसी नाहीं नट में ॥ जान न दुराव तू अजान न दुराव भले मेरे जान आई आज कारे के झपट में ॥ कालिन्दी के तीर तू अकेली तजी भीर बीर लेन गई नीर भरि ल्याई नेह घट में ॥

याही को पठाई बड़ो काम करि आई बड़ी तेरिये बड़ाई लख्यो लोचन लजीले सों ॥ साची क्यों न कहै कछु मोको किधों आप ही को पाई बकसीस ल्याई बसन छबीले सों ॥ कवि मतिराम मोसों कहत सन्देसोऊ न भरे नखसिख अंग हरख कटीले सों ॥ तू तो है रसीली रस बातन बनाय जाने मेरे जान आई रस राखि के रसिले सों ॥ १९२ ॥

आई अनमनी ह्वै बदन पियराई काई सुधि ना रही है कछु आपने पराये की । कहत कछू पै मुख काढ़त कछू को कछु देखति हो आज तेरी गति मतवारे की ॥ नेक

+ दुःखिता और लक्षिता में क्या अन्तर है ?

थिर ह्वै कै बैठ राई लोन वारौं तो पै तू हनुमान मेरी साथिन है बारे की ॥ बजर परो री मोपै पठई कहां तें बीर नजर लगी री तोहि झुलफनवारे की ॥ १८३ ॥

आई छल छन्द सों गोबिन्द संग खेलि फाग केसर के रंग की सुअङ्ग छबि छ्वै रही ॥ कहै कवि दूलह न जानि परी कौतुक मैं पिछले पहर की रैनि घरी द्वै रही ॥ धाइ घर जाइ न्हाइ नूतन बसन साजि आरसी लै हेरे मुख दूनी दुति ज्वै रही ॥ बेसर के मोती बीच रही है गुलाल लाली आली यह लाली सो हमारी सौत ह्वै रही ॥ १८४ ॥

जदपि हमारो कन्त रहत हमेस घर तदपि तिहारो दुख आनि मांहि घेरो री ॥ पदमाकर प्यारी हों परोसिनि हमारी तुम याही तें भयो है छीन मोतन घनेरो री ॥ ह्वै है कैसी हाय अब आरे यह पौन लाग्यो हौन लाग्यो भौन भौन भौरन को फेरो री ॥ सिसिर को अन्त आयो प्रगट बसंत आय अन्त आयो मेरो पै न कन्त आयो तेरो री ॥ १८५ ॥

किन अटकायो मेरे मन को महीपलाल मेरे मन याही तो खरक खरकति है ॥ कालिदास कौन धों भई है सौति सहज ही देखी सुनी नाहीं तऊ छाती दरकति है ॥ मोसों बनमाली सों वियोग भयो आली आज कौन

की धौं भागन में भई बरकति है ॥ मेरी आंख दाहिनी लगी है फरकन आज कौन बाम की धौं आंख बाई फरकति है ॥ १८६ ॥

आप अपशातन के नारी सब जहां तहां हिलि मिलि सजनी समाजनि भरति है । कालिदास कोऊ कहै फरकति आंख मेरी येरी आज मोको कछू बूझि ना परति है ॥ बाई है कि दाहिनी यों बूझति सहेली बात विष कैसी बेलि कैसी बात बिसरति है ॥ बाई आंख बूझि या परोसिन को मेरी भटू मेरी आंख दाहिनी सदाई फरकति है ॥ १८७ ॥

सवैया ।

ऐंड़ भरे अमनेक अमान गुमान मृगीन के जीत लिये हैं ॥ ओज मनोज भरे जिन के सुसरोजनहू नहिं छोर छिये हैं ॥ साल से सालत सौतिन के तिन को चित चाय वियोग दिये हैं ॥ देखे अपूरब नोखे नए मनरंजन खंजन मीन किये हैं ॥ १८८ ॥

हेरे हमें नहिं औरन को अब चोगुनो चित्त बढ़ावत मेरो ॥ नाहक तू बदनाम करै ब्रज को बनितान करै घर घेरो ॥ दोस न दीजिये येरी भटू परनारिन को सपनो नहिं हेरो ॥ मारिबो पी को न सालत है अब सालत सौत बचायबो तेरो ॥ १८९ ॥

गई सांझ समै की बदी बदि के बड़ी बेर भई निसा जान लगी ॥ कवि मन्थ जू जानी दगैलन छैलन छैल की छाती निदान लगी ॥ अब कौन को कीजे भरोसो भटू निज बारिये खेतिग्रे खान लगी ॥ अति सूधे बोलायबे की बतिया नहिं जानिये काधों बतान लगी ॥ २०० ॥

अथ मानिनी का उदाहरण कवित्त ।

माने नाहिं माने तो मनावे कैसे मकरंद लाल बिन दूखने तू लाल को बिदूखने । हँस मन मोहन सों रस बस कर एरी लाए हैं सुमन ते सुमन लागि सूखने ॥ कौलों ले न बोले मुख बोल बलि जाउं प्यारी तोते मधुराई पाई ऊख ने पिऊख ने । उने प्यास भूख मे तू तजि बैठी भूखने री तोहि तो मनावे ब्रजभूखने तू भू खने ॥ २०१ ॥

उज्जल महल जगमगत जुन्हैया कुंज गुंजत मधुप पुंज माते मधु पान कै । नगर प्रवीन कल चौसठ प्रवीन आए तेरे रस लीन नद नंदन अचानकै ॥ हिये सो हलाव चल कंठ सो लगाव अब कहै दया देव राख प्यारी परो प्रान कै । जो पै तेरो मानही सो मानो मन मानिनी तो हाहा आज सौंप मोहि मानिनी अमान कै ॥ २०२ ॥

लोचन लहे को फल सफल हमारो कर एरी प्रान पति को सनेह नेह लीन कर । तेही पाई परम निकाई की अवधि पद एती वृषभान क कुमारि अर बी न कर ॥ हाहा

ह्वै उघार मुख टार पट घूंघट को निज तन पानिप में पी के दृग मीन कर। ससिहि मलीन कर कंज छबि छीन कर सौतिन को दीन कर लालहि अधीन कर ॥ २०३ ॥

संपुटित जलज लड़ैती जलजात जब कुमुद कलाप मुकुलित दरसात है। मृग दृग सकल निहारत रहत सिर ढोरत कबंद कीर कोकिल नसात है ॥ छटेस नद नंदन हेरत तिहारी मग जब मग दीपत बिसाल बाल गात है। तृषित चकोर छबि छाकत रहत जब चाल नखतपत लखत लजात है ॥ २०४ ॥

कूस बनमाली सौ बसंत में न आली काकयाली धुनि सुनि कोउ धीर ना धरत हैं। छुन्नीलाल कहे त्यों पलासन की लाली लखे बिलखि बियोगिन के जियरा डरत हैं ॥ मौर बारि मंजुल रसालन पै धीर धीर भीर भीर भौरन के गुंज गुँजरत हैं। मदन गुरू के मनो चेला चहुं ओरन तें मान के उचाटन के मंत्र उचरत हैं ॥२०५॥

चांदनी के आंगन बिछौना बिछे चांदनी के फैल रही चांदनी सोहाई देव भूम भूम। तोही बिन फीकोई लगत चल चंद्मुखी तेरेई चरन चरचत मुख चूम चूम ॥ देख चल आली कैसो राख्यो है चंदोवा तानि तामे सुख दान तो बिरह गिरै घूम घूम। भीनी २ झालर जुन्हाई की झलक तैसी झिलमिल झालरें रही हैं झुकि झूम झूम ॥ २०६ ॥

सवैया ।

और सो कैतज बोलें हंसें पर पीतम की तू पियारी है प्रान की । केतो चुनै चिनगी को चकोर पै चोप है केवल चंद छटान की ॥ जौलों नहीं तुम तोलों अली गति दास के ईस पै और तियान की । भास तरैयन में तब लौं जब लौं प्रगटै न प्रभा जग भान की ॥ २०७ ॥

द्वार के द्वारिया पौर के पौरिया पाहरुआ घर के घन स्याम हैं । दासी के दास सखीन के सेवक पार परोसिन के धन धाम हैं ॥ श्री धर कान्ह भरे इहि भाइन मान करै इतनो पर बाम हैं । एक कहैं बिसराम अली वृषभान लली की गली के गुलाम हैं ॥ २०८ ॥

है यह नायक दच्छिन छैल धुतौ अनकूल कियो चित चोर है । है अभिमानी सु आपनें रूप को दीन ह्वै तोसों रहै निसि भोर है ॥ है तन सांवरो गोरी रंगो मन तेरई प्रेम पस्यो झक झोर है । है सुख दायक नैनन नागर है ब्रज चंद पै तेरो चकोर है ॥ २०९ ॥

मानवती वृषभान कुमारि लला मनुहारि करो रस बोरी । श्री पति कोटिक भांति मनाइ रहै गहि पाय पै मान न छोरी ॥ ताके हिये उपचार बिचार निहारि तजै न हैं उत्तर भोरी । खंडित कौल को ले दल कामिनी बंधुक के दल सों गहि जोरी ॥ २१० ॥

मानी न मानवती भयो भोर सु सोच तें सोय गए मन भावन। तेहि तें सासु कही दुलही भई बार कुमार को जाव जगावन॥ मान को रोस जगैबे की लाज लगी पग नूपुर पाटी बजावन। सो छबि हेरि हेराय रहे हरि कौन को रूसिबो काको मनावन॥ २११॥

अथ प्रेमगर्विता * का उदाहरण—सवैया।

मोहि पठावै खरी हठि कै नहिं जाऊं रहै मन मे अनखानी। याही तें सासु उदास रहै उपहास करैं ननदी औ जिठानी॥ मौन गहौं मन मारे रहौं निज पीतम की कहौं कौन कहानी। जायबो वेगि लिवायबो मोहि सोहात नहीं परभात को पानी॥ २१२॥

मनरंजन अंजन कै तन में अंग राग रचे रति रंगन में। गृह के सिगरे नित काज करैं गुरु लोगन के सत संगन में॥ कहिये कहि कौन सों कान सुने सु परे बले प्रेम प्रसंगन मे। धनि वे धन हैं तिन के लहने पहरे गहने नित अंगन मे॥ २१३॥

अथ रूपगर्विता का उदाहरण कवित्त।

नेक जो हंसो तो लाल माल होत हीरन की नेक जो मुरों तो मेरी नील मनि झलकी। अंगुरी भरी है

* प्रेम गर्विता और स्वाधीनपतिका मे क्या अन्तर है?

मुख धोयवे को झारी लेके सखिन निहारी दुति राती होत जल की ॥ जो मैं रचौं चीर तौ कुचील जुरे जोबन-न देखिवे को आखें गुनधरहू की ललकी । आंगन कढ़ौं तौ भौंर भौरन अंधेरो होत पाय जो धरौं तो मही होत मखमल की ॥ २१४ ॥

आजहौं गईती संभु न्योते नंदगांव ब्रज सांसति बड़ी है रूपवती वनितान की । घेर लीनी तियन तमासो करि मोहि लखे गहि गहि गुलुफ लुनाई तरवान की ॥ एकै बलि बोल २ औरन बतावै रीझ रीझ कुंवराई अरुनाई मेरे पान की । घूंघट उघारि मुख लखि लखि रहैं एकै एकै लगी नापन बड़ाई अंखियान की ॥ २१५ ॥

छाई छवि अमल जुन्हाई सी बिछौनन पै तापर जुन्हाई जुदी दीपति रही उमङ्ग ॥ कवि परमानन्द जहां-ई अवलोकियत जहां तहां नीलकंज पुंजन परे प्रसंग ॥ सोनजुही माल किधौं माल मालती की पहचानियत कैसे सनी पंकज सुगन्ध संग ॥ आवत निहारीहौं तिहारे सेज प्यारे पग धरत चुवोई परे गहब गुलाब रंग ॥२१०॥

सवैया ।

न्हातई न्हात तिहारई स्याम कलिन्दियो स्याम भई बहुतै है ॥ धोखेहु धोयहौं यामे कहूं तो यहै रंग सारिन

में सरसैहै। सांवरे अंग को रंग कहूं यह मेरे सुअंगन में लगि जैहै॥ छैल छबीले छुओगे जो मोहिं तो गातन मेरे गोराई न रैहै॥ २१७॥

—✻✻✻—

अथ दश विधि नायका कथन—दोहा।

प्रोषितपतिका खंडिता कलहंतरिता होइ।
विप्रलब्ध उतकंठिता बासकसज्जा जोइ॥ २१८॥
स्वाधिनपतिका कहत हैं अभिसारिका बखान।
प्रगट प्रवत्स्यतप्रेयसी आगतपतिका जान॥२१९॥
ये सब दस विध नायका कविन कही निरधार।
तिन के लच्छण लच्छ सब क्रम तें कहत विचार॥२२०॥

अथ प्रोषितपतिका का लच्छण।

प्रिय जाको परदेस में प्रोषितपतिका सोइ।
उदित उद्दीपन तें जु तन संतापित अति होइ॥२२१॥

मुग्धा प्रोषितपतिका यथा—कवित्त।

मांग सिख नौ दिन की न्योते गे गुबिन्द तिय सौ दिन समान छिन मान अकुलावै है। कहै पद्माकर छपाकर छपाकर तें बदन छपाकर मलीन मुरझावै है॥ बूझत जु कोउ कै कहा री भयो तोहि तो और ही को औरै

कछु बेदन बतावै है। आंसू सकै मोच ना सकोच बस आलिन में उलही बिरह बेल दुलही दुरावै है॥

मध्या प्रोषितपतिका यथा।

जादिन तें पीतम बिदेस को गमन कीनो तादिन तें ललना अनंद सों करी रहै। अहमद केहूं मिस हेर हेर चहूं ओर आंगुरीन छाले परे गनत घरी रहै॥ सोचन सकोचन तें बतियां दुरावति है मोचन चहति प्रान ओधक परी रहै। इन्दुमुखी जंभा लागी सुरत अचंभा लागी कंचन के खंभा लागी रंभा सी खरी रहै॥ २२३॥

आह कै कराह कांपि झमतन बैठी आय चाहति संदेसो कहिवे को पै न कहि जात। फेर मसि भाजन मगायो लिखवे को कछू चाहति कलम गहिवे को पै न गहि जात॥ एते माझ देव अंसुवान को प्रवाह बाढ़ो चाहै संभु थाह लहिवे को पै न लहि जात। रहि जात गात बात बूझे तें न कहि जात बहि जात कागद कलम हाथ रहि जात॥ २२४॥

प्रौढ़ा प्रोषितपतिका यथा॥ सवैया।

पिय साखि दै चैत के चन्दहि जीत्यो तहां मै लगी अति नेरे रही। पुनि सेवक सों करि सेवक सारदी हारदी मोको उजेरे रही॥ तन बूड्यो अबे श्रम पानिप सों

पुलकावलि हू को तरेरे रही । बलि द्वैज के कौन से जी-
तवे काज उए अथये लगि हेरे रही ॥ २२५ ॥

टीका ।

बहिरंगिनी सखी की उक्ति नायका प्रति—द्वितीया का चन्द्रमा देखने में व्यंग । प्रौढ़ा (पण्डिता) नायका द्वितीया का बाल चन्द्रमा सर्व प्रिय जान, निज नायक की दृष्टि परिवो मान, एक टक देखे है कि इसी (बाल चन्द्रमा) द्वारा इन तृषित नेत्रों को सफल करिये । ऐसे औसर में सात्विकसम्पन्ननायका की कान्ति देख, सखी पूछती है ॥

अथ परकीया प्रोषितपतिका यथा ।

जाहि दवानल पान किये तें वढ़ी हिय में सरदी सरदे सों । दास अघासुर जोर हर्‌यो जो लख्यो बतसासुर से बरदे सों ॥ बूड़त राखि लियो गिरि लै ब्रज देस पुरंदर बेदरदे सों । ईस हमे परदे परदे सो मिलों उड़ि ता हरि सों परदे सों ॥ २२६ ॥

मधु मास में दास जू बीस बिसे मन मोहन आय हैं आय हैं आय हैं । उजरे इन भौनन को सजनी सुख पुंजन छाय हैं छाय हैं छाय हैं ॥ अब तेरी सों मेरी न संक

द्रकंक व्यथा सब जाय हैं जाय हैं जाय हैं। अवलोकि गोपालहिं दास जू ये अँखियां सुख पाय हैं पाय हैं पाय हैं ॥ २२७ ॥

जाके लिये डार दई भार माझ कुलकान तनमन धाम धन प्रानहूं न्योछावरे की। जासु मुख देखे बिन पल हू पखोना काल भूल गई सुध बुध भई गति बावरे की ॥ छायगो दुरन्त वह कान्त बिजयानन्द जू हाय निबही ना दई ओकी प्रीति पांवरे की। ताप तन ताई लिखि लाखहू पठाई पाती पाखहू बिताई पै न पाई सुधि सांवरे की ॥ २२७ ॥

अथ गनिका प्रोषितपतिका यथा।

मन मोहन मेरे गए जब तें तब तें ना कहूं काल पावनो है। हम कासों कहें दिल की बतियां छतियां वही छैल पै तावनो है ॥ सु दमोदर जू निसबासर ही उनहीं के सु ध्यान में धावनो है। धन देवे धनी घनो आवे जबै कोज भांति बसंत बितावनो है ॥ २२८ ॥

अथ खण्डिता लक्षण दोहा।

अनत रमे रति चिन्ह लखि पीतम के सुभ गात।
दुखित होय सो खंडिता भाखत मति अवदात ॥ २२९ ॥

मुगधा * खंडिता यथा कवित्त ।

मुँदि गो मयंक परजंक पै परी है कहा आज की घरी की यह आनद निहारे किन। कहै पद्माकर त्यों रंग में रंगीलेई छबीले छैल ऊपर फबीले चौर ढारे किन ॥ एहो सुखदान प्रान प्यारे को बखान करो प्यारी पलकों सें तू पगों की धूर झारे किन। मंगलामुखी के बंगला तें प्रात आए रंग लालन को देख मंगलारती उतारे किन ॥

मध्या खण्डिता—कवित्त ॥

ख्याल मन भाए कहूं करि कै गोपाल घरे आए अति आलस भरेई बड़े तरके। कहै पद्माकर निहारि गज-गामिनी के गजमुकतान के हिये पै हार दरकै ॥ एते पै न आनन ह्वै निकरै बधू के बैन अधर उराहने सु दीवे काज फरके। कंधन तें कंचुकी भुजान तें सु बाजूबंद पोंचन ते कंकन हरेई हरे सरके ॥ २३१ ॥

अथ प्रौढ़ा खंडिता—सवैया ।

द्वारिका छाप लगे भुज मूल कह्यो फल बेद पुरानन तीन है ॥ कागद ऊपर छाप सुनी जेहि को सिगरे जग

* जैसे मुग्धा खण्डिता होती है तैसे धीरादि क्यों नहीं होती ?

जाहिर गौन है ॥ आप लगाई जो कुंकुम कै सो सोहाई लगै छबि सों उर भौन है ॥ छाती की छाप को प्यारे पिया कहिये बलि याको महातम कौन है ॥ २३३ ॥

पग छाप सु भाल मे लाल कहा हिय को अछो माल दई गुन हीनी। पल पीक की लीक रची असुची बलि मे नखरेख खची दुख भीनी ॥ यह स्यामलता अधरान धरी सु करी घनस्याम सु नीति प्रवीनी। मुखही तो अ-लीक रचे हैं लला तुम काहे सजाय समीपिन जीनी ॥

परकीया खण्डिता—सवैया।

आए कहूं रति मानि के मोहन मोहिनी देखि भई मनहीनी। सुन्दर दोस तुमैं न कछू बिधि मेरे लिलाट मे यों लिखि दीनी ॥ बैर कयो सिगरे जग सों तुम सों हित सो तुमहू यह कीनी। सुन्दरि यों इतनो कहिके भरि सांस लयों अंखिया भरि लीनी २३४ ॥

जौरि के कौरिक प्रानन भावते संग लए सखियान में आवत। भीजी कटाछन सों घन आनद छाय महा रस को चरचावत। ऐंड़ भरे फिरि या जिय की गति जानत जीवन होय जनावत। मीत सुजान अनूठिये रीति जिआय के मारत मारि जिआवत ॥ २३५ ॥

गनिका खण्डिता—सवैया।

अंत को प्रीति करी सो करी अब आन परी तुमै औ-

रन की दब। लालन राखिये लालन हार करी जिहि प्यार भरो कर दै सब ॥ को बिन काज करै बकवाद सुनी हती आज लई लखि वा छब। आज तें राज करो बलि जाउं सु काज कहा हमसों तुमसों अब ॥२३६॥

—❋❋❋—

अथ कलहांतरिता लक्षण ॥ दोहा ।

पीतम को अपमान करि पुनि पाछे पछताय।
कलहांतरिता नायका ताहिं कहत कविराय ॥

मुग्धा कलहांतरिता—कवित्त।

तोसों कह्यो तब नाह की ओर सु हेरिये तेरे छहा हरि खात है। आंखिन ओट लहो तबहीं छिन मे पुनि और कछू न सोहात है ॥ पायन प्रान पियारो पर्यो तुव पै कछु एंठि जुदी होइ जात है। तोहि परी यह बानि कहा छिनहीं रिस औ छिनहीं पछतात है ॥ २३८ ॥

लखि लाल लजाय रही ललना कहि सुन्दर बैठि अलीगन मे। हरि हारे बुलाय न बोली जबै तब वेज गए उठि के बन मे ॥ करते इतनी तो करी पहिले पुनि कैसी तची है तिया तन मे ॥ कहि कै न सकै सखिहू सों कछू पछताति महा मनहीं मन में ॥२३९॥

मध्या कलहांतरिता कवित्त ।

झालरनदार झुकि झूमत वितान विछे गद्दब गलीचा और गुलगुली गिलमै । जगर मगर पदमाकर सु दीपन की फैली जगा जोति केलि मंदिर अखिल मै ॥ आवत तहांई मनमोहन के लाज मैन जैसी कछू करी तैसी दिल ही की दिल मै । हेर हरि बिलमै न लीनो चिलमिल मै रही हौं हाय मिल मै प्रभा की झिलमिल मै ॥ २४० ॥

प्रौढ़ा कलहांतरिता ।

बैठी रति मंदिर मै सुभग बनाए वेस जाके रूप आगे रति रूपहू निदरिगो । आयो तहां लाल तासों बोली नहिं बाल नेक ऐसो कछू अकस अखारो आनि अरिगो ॥ एते माझ रूस हनुमान मनभावन गो लागी पछतान प्रेम पुंज यों पसरि गो । कान तें पैठि हिए बसो है जो मान सोई हाय इन आंखिन तें आंसू ह्वै निकरि गो ॥ २४१ ॥

आली है तिहारे सम कोऊ न हमारो हितू रूस बन माली हाली हम सों जुदै भयो । बीती हैक जाम रैन परत न चैन क्योंहू दूजो है न बेरी मेरो मन हीं खुदै भयो ॥ कहै हनुमान कीनो मान धौं कहा तें हाय आज सब सौतिन के मन को मुदै भयो । बिन पिय प्यारे री दिवाकर समान मोहिं आकर कलेस को निसाकर उदै भयो ॥ २४२ ॥

भई चूक बड़ी हम तें सजनी वह हूक मिटै नहिं ना वरे की। बिजयानन्द रूठि गयो जब तें तब तें गति है रही बावरी की॥ घर बाहिरहू ना सुहात कछू भई छीन दसा तन झांवरी की। खटकै ही सनेह भरी बतरानि चितौनी खरी वह सांवरी की॥ २४३॥

बरवै खानखाना।

नयना मति रे रसना निज गुन लीन।
कर तू पिय झझकारे अजगुत कीन *॥ २४४॥

सवैया।

पी सों झुकी रसना बिन काज लखे गुन नाम सयान तिहारे। नयना चले अति रूखे रहे तुम ताही तें नाम ए जानत धारे॥ संत बिरह चल्यो अति हीं जिहि तें दुख

---

* कलहान्तरिता नायिका कहती है कि नयना (नीति विहीन) मति (निषेधार्थक) और रसना (रसविहीन) ने निज प्रीतम के प्रति यदि अनुचित आचरण किया तो कुछ आश्चर्य नहीं क्योंकि उन्हों ने निज नाम के अनुसार ही किया परन्तु हे कर अर्थात् हस्त तू ने निज नाम कर अर्थात् प्रीति का करने वाला रखा कर जो प्रीतम को झिझकार दिया यही बड़ा आश्चर्य किया।

नेक टरै नहिं टारे। पाय सु लच्छन नाम अरे कर काहि को नन्दलला झझकारे ॥ २४५ ॥

परकीया कलहांतरिता सवैया।

नित ठान्यो अठान जेठानिन सों पुनि सासु की केती रिसाई सही। तृन तूल गनी सब सौतिन को ननदी को अदीन ह्वै दाह दही ॥ इतनो कियो जाके लिये हम सुन्दर ताहि सों आज हौं रूसि रही। सखि सोचति हौं तब तें चित में बिधि की गति जाति कछू न कही ॥ २४६ ॥

गनिका कलहांतरिता।

कै पटुता परवीन तिया मनुहारि कै बोल कहै मन मानै। लै बहु रंगन अंगन में अंग राग लगाय सुगंधन सानै ॥ बंक लखै भृकुटीन कै भायन सूवे सुभायन सों रस सानै। ही हठि कै दृग दै कजरा कर फूल हरा गजरा नजरानै ॥ २४७ ॥

कवित्त।

ससकि ससकि उठे कसकि कसकि हियो याही अपसोस तें कढ़ै ना भौन कौने सों। एक तान लागे मुकुतान के अनेक हार बकसत राज काज रूपे सों न सोने सों ॥ भनत कविन्द ऐसे नाह सों गुनाह बिना कियो मैं बिगार रार टरै कौन टौने सों। एरी मेरी कुमति तैं कलहु क-

राई अब सुलह करावै कौन सांवरे सलोने सों। २४८॥

विप्रलब्धा लक्षण दोहा।

लखि सूनो संकेत जो पिय बिन अति अकुलाय।
ताहि विप्रलब्धा कहत सु कविन के समुदाय॥ २४९॥

मुग्धा विप्रलब्धा।

केलि के बगीचा तें अकेली अकुलाय आई नागरि नबेली बेली देखत छहर परी। कुंज के अवास तहां गुंजरत भौंर पुंज सीतल समीर सीरे नीर की नहर परी॥ देव तिहि काल गूंदि ल्याई माल मालिन यों देखत बिरह बिख व्याल की लहर परी। छोह भरी छरी सी छबीली छिति माहँ फूल छरी सी छुवत फूल छरी सी छहर परी॥२५०॥

मध्या विप्रलब्धा।

घटा घहराति बिज्जु छटा छहराति उठि आई है हरबराति ऐसे मेघ झर मे। काम की चपेटें लिये लाज की लपेटें तहां हरि सों न भेट भई कुंज केलि घर मे॥ जकी सी रही है तकि सुन्दर अचंभित ह्वै हाली ना परति गई बूड़ि सोच सर मे। आधे आधे आंखिन सों हेरति अलिन तन आधी बात आनन मे आधिक अधर मे॥ २५१॥

प्रौढ़ा विप्रलब्धा।

उन्नत उरोज अबला की सेत कंचुकी है राखी ना कछूक चित चोप रंगरेजे मे। मल मल सारी सजी मोतिन किनारीदार झिलि मिलि जोति होति चांदनी अमेजे

मे ॥ विहंसि बदन बिमला सी सो अटा पै गई पेखे ना प्रवीन बेनी पिय सुख सेजे मे। जरद भई है वह दरद बतावै कौन सरद मयंक मारी करद करेजे मे ॥ २५२ ॥

परकीया विप्रलब्धा।

गंजन सु गुंज लग्यो तैसो पौन पुंज लग्यो यो सम निकुंज लग्यो गुंजन सों गजि के। कहै पदमाकर न खोज लग्यो ब्यालन को घालन मनोज लग्यो तीखे तीर सजि के ॥ सूखन सु विम्ब लग्यो दूखन कदंब लग्यो मोहि न विलंब लग्यो आई गेह तजि के। मीजन मयंक लग्यो मीत हू न अंक लग्यो पंक लग्यो पायन कलंक लग्यो बजि के ॥

चंद दुति मन्द भई फन्द में परी हों आनि ननद क-रैगी सोर छाड़ गलबान दे। सासु सतरैहै जेठ पतिनी रिसैहै बंक बचन सुनैहै कहों जोर जुग पान दे ॥ सौंलों बिनती है गिनती है कै हहा लों देव करो कहा चाह-ति रहन कुलकान दे। दान देरी जिय को नदान निर-दई कान्ह बसी सब रैन मोहि अब घर जान दे ॥२५४॥

गनिका विप्रलब्धा।

निसि अँधियारी तज प्यारी परबीन चढ़ि माल के मनोरथ के रथ पे चली गई। कहै पदमाकर तहां न मन मोहन सों भेट भई सटकि सहेट तें अली गई ॥ चंदन सों चांदनी सों चंद सों चमेलिन सों और बन बेलिन के दलन दली गई। आई हुती छैल को छले को छल छ-न्दन सों छैल तो छल्यो न आप छैल सों छली गई ॥२५५

उत्कंठिता लक्षण ॥ दोहा ।

पिय सहेट आयो नहीं चिन्ता मन में आन ।
सोच करै संताप सों उतकंठिता बखान ॥ २५६ ॥

मुग्धा उत्कंठिता ।

खरी दुपहरी भरी हरी हरी कुंज मंजु देव अलि पुंजन के गुंज हियो हरि जात । सीरे नद नीरन गंभीरन समीर छांह सोवे परे पथिक पुकारे कीर करि जात ॥ ऐसे में किसोरी भोरी गोरी कुंभिलाने मुख पंकज से पाय धरा धीरज में धरि जात । सौंहैं घाम स्याम मग हेरति हथेरी ओट ऊंचे धाम बाम चढ़ि आवति उतर जात ॥

मध्या उत्कंठिता दोहा ।

पिय आयो नहिं यह व्यथा रही जु बाल दुराय ।
मुदे नेह की बास लौं मुख पर प्रगट लखाय ॥२५८॥

मध्या उत्का यथा ।

आए न कन्त कहां धौं रहे भयो भोर चहै निसि जाति सिरानी । यों पदमाकर बूझ्यो चहै पर बूझि सकै न सकोच की सानी ॥ धारि सकै न उतारि सकै सु निहारि सिंगार हिये हहरानी । सूल से फूलन के फर पैं तिय फूलछरी सी परी मुरझानी ॥ २५६ ॥

बारही बार बिलोकति द्वारही चौंकि परै तिनके खरकेहूं । सेज परी मतिराम बिसूरति आई अहो अबहीं लखि मैंहूं ॥ संग सखान के खेलत हो अजहूं रजनीपति के अथयेहूं । लालन बेगि न जाहु घरैं फिरि बाल न मानिहै पाय परेहूं ॥

प्रौढ़ा उत्कंठिता कवित्त।

बैठी रंग रावटी में हेरत पिया की बाट आए ना बिहारी भई निपट अधीर में। देवकीनन्दन कहै कारी घटा घेरि आई जानी गति प्रलै की डेरानी भय भीर में॥ सेज पै सदासिव की मूरति बनाय पूजी तीन उर तीन ताकी करी ततबीर में। पाखन में सांवरो सुराखन में अछैबट ताखन में लाखन की* लिखी तसबीर में ॥२६०

परकीया उत्कंठिता।

डर भो नगर कैधों काहू सों झगर कैधों बीच ही बगर आनि सखा बिरमायो है। लीलाधर गैल में कि भूल्यो तमरैल में किधों सु काहू खेल में सखान अरुझायो है॥ दूति ही सों तोष भो कि मोही सों सरोस भो कै कलह परोस भो सु धर हरि धार्यो है। कंलि की न चाह धों हिये न को उछाह धों सु कौन हेत नाह धों सहेट नहिं आयो है॥ २६१॥

गनिका उत्कंठिता सवैया।

सेज सुधारि बिछौनन झारि सुगंध बगारि करी मन भाई। मंडन अंग सिंगार सिंगारन हारन पोर लगी अकुलाई॥ बाहर तें चलि भीतर आवत भीतर तें पुनि बाहर जाई। जेहर कै धुनि तालहि दै तिय देहरी में जनु मैन नचाई॥ २६१॥

---

* पंडिता नायका ने शिव, सांवरो, अच्चयबट और लाखन (लक्ष्मण) को स्थापित कर काम, अनल, अंबु और अनिल से अपने को रक्षित किया॥

वासकसज्जा लक्षण दोहा ।

साजै सेज सिंगार तिय पिय मिलाप के काज ।
वासकसज्जा नायका ताहि कहत कबिराज ॥ २६२ ॥

मुग्धा वासकसज्जा सवैया ।

भौन के कोन में भीतर जाय के बैठि सिंगार को साज बनायो । सुन्दर सीस को फूल दियो सिर मानो मनोज को छत्र चढ़ायो ॥ देखति है दुरि द्वार की ओर न काहू सखीन सों भेद जनायो ॥ देखि चरित्र नवोढ के मैन सु आपनी कीरति को फल पायो ॥ २६३ ॥

मध्या वासकसज्जा कवित्त ।

धारे लाल सारी प्यारी हीरन किनारी वारी अंगन अनंग दुति रंग चढ़ि आयो है । दामोदर कहै बाल बैठी है बिनोद भरी लाल को विलोकिबे को मोद मढ़ि आयो है ॥ झांकी झुकि झपकि झरोखा खोलि घूंवट को बदन बिकास को प्रकाश बढ़ि आयो है । जोरि कै नक्षत्र विथोरि घन घोर मानो फोरि रवि मंडल को ससि कढ़ि आयो है ॥ २६४ ॥

प्रौढ़ा वासकसज्जा सवैया ।

भाखति है मुख बैन सखीन सों लाख हिये अभिलाखन जो है । कोमल हासनि नैन बिलासनि अंग सुबा·

सन के मन मोहै ॥ मूरतिवंत किधौं तुलसी तुलसी बन में रति मूरति सोहै । कुंज बिराजति जोय बधू कामला अनु कुंज कुटी महं सोहै ॥ २६५ ॥

परकीया वासकसज्जा कवित्त ।

पावन पलोट पोट सांझ तें सोआई सासु कहत बहानी देवरानी नीद थिरकी । ननद पठाई रात जागिबे परोसिन के मूंद के किवार बेनी गूंदि राखी सिर की ॥ सारी सुक पींजरा पै पंवई गिलाफ डारि भीतर धरावत हिये में प्रीति थिर की । चंद सो बदन ढांकि झाकति झरोखा बैठि मंद करि दीपक कमंद डारि खिरकी ॥२६६॥

गनिका वासकसज्जा सवैया ।

नीर के तीर उसीर के मंदिर धीर समीर जुड़ावत जीरे । त्यों पदमाकर पंकज पुंज पुरैन के पात परे न जे पीरे ॥ ग्रीषम की क्यों गनै गरमी गजगौनर चारु गुलाब गंभीरे । बैठी बधू बनि बाग बहार में बार बगार सेवार से सीरे ॥ २६७ ॥

स्वाधीनपतिका लच्छण दोहा ।

जा तिय के आधीन ह्वै पीतम रहै हमेस ।
स्वाधिनपतिका नायका भाखत कला असेस ॥ २६८ ॥

मुग्धा स्वाधीनपतिका कवित्त ।

केलिकोठरी तें कढ़ै बाहिर घरीकहू न छोड़ खेल संग के सखान को दियो है री । गेह के उचित जन हास परहास करें तज चित में न नेक सकुच छयो है री ॥ परि पूर जोबन न भलक सरीर आई उर अवहीं तें यह भावहि लियो है री । जादिन तें आई गौनहाई बाल ता दिन तें सांवरो सलोनो पर टोनों सो कियो है री ॥ २६९ ॥

मध्या स्वाधीनपतिका सवैया ।

लै परजंक धरे भरि अंक निसंक ह्वै स्वावत प्रेम उपायन । चौंक परे तें परे उर लाग हिये सो हियो अनुराग सुभायन ॥ लाजन हौं लरजों गहिरी बरजो गहिरी कहरी कह दायन । जागत जानि कहानी कहै अरु सोवत जानि पलोटत पायन ॥ २७० ॥

प्रौढ़ा स्वाधीनपतिका कवित्त ।

चाह के हैं चाकर गुलाम गोरे गातन के सेवक हैं साचे सुघराई सुखदान के । खानेजाद खासे खूबसूरत के भोज भने जोरावर दार तेरे कदम कलाम के ॥ छोरा छांह छवि के पिछोरा पाय पोंछन के भौंरा खुसबोई मुख मधुर बतान के । मोह के मोसाहब मोसही दृग फेरन के हेरन के हुकुमी हजूरी हंसिजान के ॥ २७१ ॥

फूलन सों बाल की बनाय गुही बेनी लाल भाल दीनी बेंदी मृगमद की असित है। अंग २ भूखन बनाए ब्रजभूखन जू बीरी निज कर सों खवाई कर हित है॥ ह्वै के रसबस जब दैवे को महावर को सेनापति स्याम गह्यो चरन ललित है। चूम कर प्यारि को लगाय लई आंखिन सों एहो प्रान प्यारे यह अति अनुचित है॥२७२॥

परकीया स्वाधीनपतिका।

नखन बिलोकत हीं नखन बितीत भयो आंगुरीन पेखि कछू आड़ ना कराई मै। गुल पग धाय मोरबान हूं मझाय पीडुरीन पर जाय जूथ्यो जंघन भोराई मै॥ भौन कवि कहै घाघरी हूं में घुमरि आयो नेकहू मुख्यो न लंक लचक लराई मै। लूटि गयो लालची लजीलो मन मेरो हाय उन्नत उरोज धराधर की तराई मै॥ २७३॥

ढुरि ढुरि परै बेनी बिलुलि नितंबन पै घेरि घेरि घूमरत घाघरो घनेरो है। फेर२ फिरत निपट लचकीली कटि फेरि दृग फेरि२ फेरि मुख फेरो है॥ भुज की डुलनि वा खुलनि कुच कोरनि की चाहि २ परमेस भयो चित चेरो है। झुकि झुकि झूकति भरति घट ज्यों ज्यों त्यों त्यों मैन के भभूकन भरत घट मेरो है॥ २७४॥

उझकि झरोखा ह्वै झमकि झुकि झांकी बाम भूल गई स्याम जू की खबर तमासा की। कहै पद्माकर च-

हूंवा चैत चांदनी सी फैल रही तैसियै सुगंध सुभ स्वासा की ॥ तैसी छबि तकत तमोर की तरौनन की वैसी छबि बसन की बारन की बासा की। मोतिन की माग की मुखौं की मुसकान हूं की नैनन की नथ की निहारिबे की नासा की ॥ २७५ ॥

सवैया।

जाल की चूनरी चीकनो गात चकोर थके मुखचन्द के धोखे। लामी लटैं लटकैं कटि खीन पयोधर है मन मोहन पोखे ॥ बेधे मुबारक के उर में सर एको परै ना कटाच्छ के श्रोखे। बाकी न राखी कजाकी कछू जब बांकी चितौन तैं झांकी झरोखे ॥ २७६ ॥

गनिका स्वाधीनपतिका कवित्त।

अतर लजात मृगमद पछतात पारजात बारिजात सब सौरभ को तंत्र है। श्रीपति अगर में अगर उद्गार सी है बगर २ छबि छाजत अनंत है ॥ ही करन सुख सुख सौत को मसीकरन मदन जसीकरन जीकरन जंत्र है। पिय को रसी करन रति को हंसी करन सीकरन तेरोरी बसीकरन मंत्र है ॥ २७७ ।

अभिसारिका लच्छण दोहा।

करै चलन चरचा चलै पहुंचे लो पिय पास।
बोल पठावै सिख सुनै अभिसारिका प्रकास ॥२७८॥

मुग्धाभिसारिका दोहा।

नैन चकोरन चंद्रिका प्यारी आज निसंक।
आस बास आवत नखत लीने बीच ससंक ॥२७९॥
चलिये नवला बदन तें नाम तिहारे लाल।
हांसी बातन में कछू हांसी निकरी हाल ॥२८०॥

मध्याभिसारिका कवित्त।

सखिन समाज तें उठाय अरबिन्द नैनी दत्त कवि कहै जान बीती जान रतियां। भूखन बनाय पहराय जरतारी सारी हीरन किनारी दै संवारी हंस गतियां॥ किंकिनी की नीकी जोति झलर मलर होति लाज तें नबेली कै कढ़ै न मुख बतियां। नूपुरन दाबि दाबि भूपर धरति पग दंत दाबि अधर छबीरी दाबि छतियां ॥२८१॥

प्रौढ़ाभिसारिका।

सहज सुबास जुत देह की दुगुन दुति दामिनि दमक दीप केसर कनक तें। मतिराम सुकवि सिरीस सुकुमार अंग सोहत सिंगार चारु जोबन बनक तें॥ सोयबे को सेज चली प्रान पति प्यारे पास जगत जुन्हाई जोति हंसन तनक तें। चढ़त अटारी गुरु लोगन की लाज न्यारी रसना दसन दाबे रसना झनक तें॥ २८२॥

मन्द मन्द चली नद नंद पै अनंद भरी उमग अनंद

संभु मन्द मुसकान की । बोलत अली सों बिहंसत ललना के लटकन की लुरन औ मुरन अधरान की ॥ फहरात छोर छहरात लहंगे की छबि गूजरी जराय की वो जावक जपान की । पगन की लाली पग नखन उजाली आगे जाली सी परति जाति आली मुकतान की ॥२८३॥

परकीयाभिसारिका ।

बांसुरी के बीच एक भौंर डारि ल्याई सखी ढांकि पट पल्लव सों महा बुद्धि भारी सों । भनत पुरान या मे आप ही तें धुनि होत कान दैके कह्यो सुन राधा सुकमारी सों ॥ रीझ रीझवारी जाहि आप ही मगन भई नभ तन चितै मुख मूघो स्याम सारी सों । आंचर में गांठ दै बिहंसि उठि चली आली प्यारी कही आज ह्यां हीं रहोना हमारी सों ॥ २८४ ॥

सूझत न गात बीति आई अधरात अरु सोवे सब जानि गुरुजन जे बगर के ॥ छपि के छबीली अभिसार को किवार खोल्यो खुलगी सुगंध चारु चंदन अगर के ॥ देव कहै भौंर पुंज आए कुंज कुंजन तें पूछ पूछ पाछे परे पाहरू डगर के । देवता कि दामिनि मसाल कैधों जोति ज्वाला झगरे परत जागि सगरे नगर के ॥ २८५ ॥

गनिकाभिसारिका सवैया ।

रुचि पाय झवांय दई मेहंदी जिन के रंग होत मनो

नग है। अब ऐसे मे स्याम बुलावैं सखी कहि क्यों चलौं पंक भयो मग है ॥ अधरात अंधेरी न सूझ परै भजिजोय सी दूतन को संग है। अब जाउं तो जात धुयो रंग है रंग राखो तो जात सबै रंग है ॥ २८६ ॥

दिवाभिसारिका।

सारी जरतारी की झलक झलकत जैसी केसर की अंगराग कीनो सब तन मे। तीखन तरनि के किरनिते दुगुन जोति जगत जवाहिर जराऊ आभरन मे ॥ कवि मति राम आभा अंगन अंगार कैसी धूम कैसी धार छवि छाजत कचन मे। ग्रीषम दुपहरी मे पिय को मिलन चली जानी जात नारि ना दमारि जात बन मे ॥२८७॥

कृष्णाभिसारिका सवैया।

कज्जल सी निसि सज्जल से घन तज्जल मे चली संग न सत्थी। कुंज अंधारी सिधारी छुसेन विहारी पै जाति ती सुद्धि मे नत्थी ॥ किंचिक दव्वत सर्प लग्यो पग सर्प च-सीटत एक पगत्थी। जोर जाजीरन सो जकयो मनो छू-टि चल्यो मनमत्थ की हत्थी ॥२८८॥

एक तो अंधारी दुजे कारी घटा घेरि आई तीसरी अंधारी भई काम अंधराई की ॥ चौथे अंधकार बड़ो नंद के कुमार बिना पांचवी भई है मुगधा की मुगधाई की ॥ एते तम तामैं चली तामरसलोचनी सु देख्यो इक सांप

तड़िता के उरझाई की ॥ उरग उठाय उर लाय लपटाय लीनी हाय हाय दैया गिरी न्वैया री कन्हाई की ॥२८९॥

शुक्लाभिसारिका कवित्त।

सजि ब्रज चंदपै चली यों मुख चंद जाको चंद चांदनी को मुख मंद सो करत जात। कहै पदमाकर त्यों सहज सुगंध ही तें कुंज बन पुंजन मे कंज से भरत जात॥ धरत जहाईं जहां पग है सु प्यारी तहां मंजुल मजीठही के माठ से ढरत जात। हारन तें हीरा स्वेत सारी के किनारन तें बारन तें मुकता हजारन झरत जात ॥२९०॥

प्रवत्स्यत्प्रेयसी लच्छण दोहा।

चलन चहै परदेस को जा तिय को जव कंत।
ताहि प्रवत्स्यत प्रेयसी भाखत कवि मतिवंत ॥२९१॥

मुग्धा प्र० सवैया।

सेज परी सफरी सी पलोटति ज्यों ज्यों घटा घन की गरजै री। त्यों पदमाकर लाजहि तें न कहै दुलही हिय को हरजै री॥ आली कछू को कछू उपचार करे पै न पाय सकै मरजै री। जाव न ऐसे समै मथुरै यह कोऊ न कान्हर को बरजै री ॥२९२॥

मध्या प्र०।

सूखे भजो न ते औधि के द्योस गने जे परे अंगु-

रीन मे छाले । मैन के बानन के अति गाढ़े बने घने घाय अजौं उर आले ॥ आए सुने कि सुन्यो चलिबो सु हिये लगि दूर किये न कसाले । आखैं लजीलीकै यों कहि राधिका राखति गोकुल चंद के चाले ॥२८३॥

पी चलिवे की चली चरचा सुनि चंद्रमुखी चितई दृग कोरन । पीरी परी तुरतै मुख पै बिलखी अलि व्याकुल मैन मरोरन ॥ को बरजे अलि कासों कहै मन झूलत नेह ज्यों लाज हिंडोरन । मोती से पोय रहे अंसुवा न गिरे न फिरे बरुनीन के कोरन ॥ २८४ ॥

जाके बिलोकि हुलास कै फांस परे तें उदास नहीं को । नेकहु दूर भयो न कबौं कितहू नितहू सुठि माल सो ही को ॥ औचक सो बिजयानन्द पीकै पयान समै लखि टीको दही को । पीर गंभीर उठी हिय मो जनु तीर सों तीख्यो लग्यो दुलही को ॥ २८५ ॥

कवित्त ।

बैठी है सखिन संग पिय को गमन सुन्यो सुख के समूह मे वियोग आग भरकी । गंग कहै त्रिविध सुगंध लै बह्यो समीर लागतहीं ताके तन भई व्यथा ज्वर की ॥ प्यारी को परसि पौन गयो मानसर पै सु लागतहीं औरे गति भई मानसर की ॥ जलचर जरे औ सेवार जरि छार भई जल जरि गयो पंक सूख्यो भूमि दरकी ॥२८६॥

प्रौढ़ा प्र० ।

जाही जुही मल्लिका चमेली मन मोदिनी की कोमल कुमोदिनी की उपमा खराब की। कहै पद्माकर त्यों तारन विचारन को बिगर गुनाह अजगैबी गैर आब की ॥ चूर करी चोखी चांदनी की छवि छलकत पलक मे लीनी छीन आब महताब की। पापर कहत पीय कापर परैगी आज गरद गुलाब की अवाई आफ़ताब की ॥ २९७ ॥

कैधों बाढ़ी बाड़व अनल ज्वाल जाल कै त्रिलोचन के लोचन के दीप दीपै गथ की। कैधों मारतंड की प्रचंड की प्रभा हैं कैधों लपट झपट धाई विरही विपथ थी ॥ रातें रितुराज के समाज के धुजा हैं किधों श्रोनित भरी हैं मुनि मैनहू सुरथ की। किंसुक कुसुम्भ जालें फूली बन मालें किधों सेस मुख ज्वालें के मसालें मन मथ की ॥ २९८ ॥

परकीया प्र० सवैया ।

बात बिठोक की टेर कहे कहूं गागर रीतिये आनि दिखावे। सूनो के पाय तो आपहि रोकि के आज रहो कहि यों ललचावे ॥ झांकि झरोखा अजान सी ह्वै के बिछोह के पीर को गीतन गावे। प्यो परदेस को चाहै चल्यो पै परोसिन सों कहूं जान ना पावे ॥ २९९ ॥

गनिका प्र० दोहा ।

चलत पीय परदेस को बरजि सकीं नहिं तोहि ।
लै ऐहो आभरन जो जियत पायहो मोहि ॥२००॥

सवैया ।

प्रीति की रीति अनोखी अहै बिछुरे ते महा दुख देति सदाहीं । जानत हैं जन वेई भले जिन पै इन की है परी परछाहीं ॥ याते बहोर २ निहोर कहौं विजयानंद जू तुव पाहीं । दीजिये मोहि कछू अवलम्बन जो हो लग्यो निज अङ्गन माहीं ॥ ३०१ ॥

आगतपतिका लच्छण ।

आवत बलम बिदेस तें हरखित होय जु बाम ।
आगतपतिका नायका ताहि कहत रसधाम ॥२०२॥

मुग्धा आगतपतिका सवैया ।

कानि करै गुरु लोगन की न सखीन की सीख नहीं मन लावति । ऐड़ भरी अंगराति खरी कत घूंघट मे नए नैन नचावति ॥ मंजन कै दृग अंजन आंजति अंग अनंग उमंग बढ़ावति । कौन सुभाव री तेरो पयो छिन आंगन मे छिन पौरि मे आवति ॥ ३०३ ॥

मध्या आगतपतिका ।

आज सखी ननदी कर प्यार विभूखन भूखन दै प-

ठए हैं। मंगल मूल बनाय बिचित्र सु फूल दुकूल निहारि नए हैं॥ आनद की सु घरी उघरी सिगरे मन वांछित काज भए हैं। बूझति तोकहं बासर के कह री अब केतिक जाम गए हैं॥ २०४॥

प्रौढ़ा आगतपतिका।

परदेस तें सुन्दर पीतम आए सुने अति हास बढ़े सिगरे। उर कंठ लगाय लई ललना गहि गाढ़े अनन्द सों अंक भरे॥ तरकी सुतनी दरकी अंगिया मनिमालन तें महि लाल गिरे। जनु पी के मिले तिय के हिय के अंगरा बिरहागिन के निकरै॥ २०५॥

कवित्त।

धाई खोर २ तें बधाई पिय आगम की सुख कर कोर कोर भांवरे भरति है। मोर मोर बदन निहारत बिहारी भूमि धोर २ आनद घरी सी उघरति है॥ देव कर जोर जोर बंदत सुरन गुरु लोगन के लोट २ पायन परति है। तोर २ मोतिन के हार पूरे चौकन नछावर को छोर २ भूखन धरति है॥ २०६॥

परकीया आगतपतिका सवैया।

आवत ज्यों मथुरा मे सुन्यो हरि गेहनि तें तिय दौर करी सी। लाज को छोर ज्यों डोरी सों टूटत हाथ तें

छूटि चली चकरी सी। देखत वा सुभ मूरति को कवि सुंदर यों हौं रही पकरी सी। हाली न चाली ठगी सी सबै ते छकी सी थकी सी जकी जकरी सी। ३०७॥

आए री पीय परोसिन के सु भई धुनि मो मन मोद मई है। हौं कवि दूलह वाकी दसा लहि जाति जरी तन ताप तई है। मोहि बकावैं सबै घर की सु कहौ बहू बेदन कौन भई है। और के आनंद आनंद होत जरै जिय की यह रीत नई है॥ ३०८॥

गनिका आगत पतिका।

कालह की सांझही तें सजनी हौं खरी दुचिती अंसुवान बहाऊं। आज तो बायस मो घर आय के बोलि गयो सखि होत पहाऊं॥ जो अबके अपनी इन आंखिन संतन प्यारे को देखन पाऊं। रागिनी रागहि जा उंगी बागहि कागहि पागहि पाग बंधाऊं॥ ३०९॥

इति दशनायका।

उत्तमादि प्रकृतिक त्रिविध भेद, दोहा।

केहूं ऐगुन कंत के लखै न हित के जोर।
पियमयंकमुख के भए रमनी नैन चकोर॥ ३१०॥
पिय सनमुख सनमुख रहति बिमुख बिमुख ह्वै जाति।
धनि दरपन प्रतिबिम्ब लौं तेरी गति दरसाति॥३११॥

ज्यों ज्यों आदर सों ललन पानिप देत बनाय।
त्यों त्यों भामिनि नैनसों खिनखिन ऐंठति जाय ॥३१२॥

उत्तमा यथा—कवित्त ।

झांके फूलबाग में झरोखे अनुराग भरी देखे तहां आप ऐसे चरित बिहारी के। कहै कवि दूलह बखानत बने ना जैसे लहलहे लोचन ललित सुकुमारी के॥ फूले अङ्ग अङ्ग बाढ़े उरज उतंग फैली छबि की तरंग मुखचंद के उजारी के॥ ज्यों ज्यों परनारी पिय लेत भरि गोद त्यों त्यों हिये होत परम प्रमोद प्रानप्यारी के॥ ३१३॥

मध्यमा यथा॥

फैल रही चैत की सु चांदनी रुचिर कै धौं केतकी सुबास छायो सहन अटारी को। बेनी कबि दंपति रमत रति रंगन में पति के बदन कढ्यो नाम और नारी को॥ भौंहे सतराय तिरछौंहें मुंह नाय अलसौंहें बड़ो घूंघट झुकायो स्याम सारी को। मानो एकबारही अन्धारो को पसारो भयो छप्यो चन्द बिन्दु मनो छायो घटाकारी को॥ ३१४॥

अधमा यथा।

मान जिन करै पिय कान्ह जिय जान ऐसे ऐस ही सयानी मांझ जान परी कांची सी। बातन बटोर तो

सों कहै गठ छोर कोज जानत न भोरी भटू मान लेत सांची सी ॥ भनत गुमान कही आवत न मेरे कान जान परी मोको अब कौन मति राची सी। कौन है अजान एरी कहै सुखदान तोसों लागी रहै तेरे कान करन-पिसाची सी ॥ ३१५ ।

सवैया ।

पांवरी आनि भिखारी मनो पजनेस सदा चित देत है फेरी। जी की कठेठी अरेठी गंवारिन नेक नहीं कबहूं हंसि हेरी ॥ आंधरे रूप के जोम तें बावरी जानि परै परपीर ना एरी । नंदकुमारहि देखि दुखी छतिया कसकी ना कसाइन तेरी ॥ ३१६ ॥

चतुर्विध नायका जाति * कथन दोहा ।

पद्मिनि चित्रिनि संखिनी अरु हस्तिनी बखान ।
त्रिविध नायका भेद में चारि जाति तिय जान ॥३१७॥

---

* नायका लक्षण का स्थान तज कर यहां जाति बिभेद क्यों हुआ और जैसे नायका जाति वर्णन किया वैसे नायक जाति क्यों नहीं ? कोक वालों ने संयुक्त वर्णन किया है ।

पद्मिनी यथा दोहा ।

तन अमोल कुंदन बरन सम सिरीस सुकुमार ।
सुच्छम भोजन रस सुरति सो पद्मिनि निरधार ॥३१८॥
तन सुबास दृग सलज सुभ मन सुचि करम पुनीत ।
इन सुबरन बरनी लई जगत निकाई जीत ॥ ३१९ ॥

चित्रिनी यथा ।

जिहि मृगनैनी को रहै नृत्त गीत में ध्यान ।
चोप सदा पिय चित्र सों वह चित्रिनी सुजान ॥ ३२० ॥
मित्र नाहिं चितवत कहूँ चित्र रही चित लाय ।
पत्री हेरति है कोऊ पत्री सनमुख पाय ॥ ३२१ ॥

संखिनी यथा ।

देह छीन मोटी नसें कुच लघु निलज निसंक ।
कोपवती नख दंत रुचि संखिनि पी के अंक ॥ ३२२ ॥
सनख हियो लखि लाल को यह मन होत संदेह ।
नखन खोदि चाहति कियो लालन के हिय गेह ॥३२३॥

हस्तिनी यथा ।

थूल अंग लोमन छयो गोरी भूरे केस ।
गजगौनी दुरगंधिनी भनी हस्तिनी भेस ॥ ३२४ ॥
रँगनि मोटी मोरटी जोबन मद ऐंडाति ।
सखिन संग गजगामिनी चली ठान सों जाति ॥ ३२५ ॥

इति नायका भेद ।

अथ नायक विभेद दोहा ।

सुन्दर गुण मंदिर जुबा जुबति बिलोके जाहि ।
कवित राग रस निपुन सो नायक कहिये ताहि ॥३२६॥

कवित्त ।

मंजु मोर मुकुट निपट घुघुरारी लटैं झूलि २ कुंडल कपोलन पै झलकैं । बारिज बदन रस रूप को सदन लच्छ दमकै रदन भरि भरि छबि छलकैं ॥ कानन छुवत कोये नैन मैन कोटि मोहै सोभा सर लखि लखि मानो मीन ललकैं । देखिबे को स्याम सोम देतो दृग रोम २ सो न कीनी बिधि औ अवधि कीनी पलकैं ॥ ३२७ ॥

ग्वारन को प्यार है सिंगार सुख सोभन को साचो सरदार तीन लोक रजधानी को । गाइन के संग देख आपनी बखत लेख आनंद बिसेख रूप अकह कहानी को ॥ ठाकुर कहत साचो प्रेम को प्रसंग बारो जा लखि अनंग अंग रंग दधि दानी को । पुन्य नंद जू को अनुराग ब्रजबासिन को भाग जसुमति को सोहाग राधा रानी को ॥ ३२८ ॥

चन्द्र नख चन्द्रिका चकोर पद कंजन पै मेरो मन मंजुल मलिन्द ललकन पै । बंसी त्यों बिसाल लाल अधर

अमोलन पै वारौं कुरःबन्द दंत कुन्द कलिकन पै । छबि पै छपाकर प्रभाकर प्रताप ही पै वारौं कोटि काम कमनीय झलकन पै । पन्नगीकुमार औ कदंबिनी देवार वारौं बांकुरे विहारी की अमोल अलकन पै ॥ ३२९ ॥

सवैया ।

सिर मोर पखान छरा छबि पुंज बिराजत गुंज की माल गरे । मुख पूनो सुधानिधि ह्वै न गनै दृग नील सरोजन ह्वै निदरे ॥ घन से तन बीजुरी पोरो झगा बगपांतिन ज्यों मुकुता की लरैं । निकरै हिय तें न जुवा छबि सों हरि आनि जबै इत ह्वै निकरे ॥ ३३० ॥

पति भेद दोहा ।

सुकियापति को पति कहैं परकीया उपपत्ति ।
बैसिक नायक की सदा गनिका ही सों रत्ति ॥ ३३१ ॥

पति यथा कवित्त ।

बांधे मंजु मोर सीस कंचन घटित सिर पेच कलंगी की छबि पुंजन ठग्यो है री । जामा जेबदार औ कुसुमी कटि फेटा पट बाजूबंद जटित उमैड़ सों तग्यो है री ॥ दामोदर सु कवि अनंग धर रूप मानो अंग २ सोभा की तरंग उफन्यो है री । नवल बनी को अवनी को प्रान प्यारो नीको नवलकिसोरजी को बनरा बन्यो है री ॥ ३३२ ॥

पिय भई प्यारी गहि चरन मनावै बांधे जरकसी चीरा सिर जरद पमैठो है। तदपि न मानै तानै भृकुटी कमानै मानै कोमल सुभाव कीनो अति ही कुठैठो है ॥ कहत किसोर देख देखत मही की ओर बरबस आली री हिये में जात पैठो है। अमल अनूप रूप राधिका को ठान आज परम सुजान कान्ह मान कर बैठो है ॥३३३॥

आई चलि काल्हि ही तू मायके तें एरी अलि कौन बिधि कैसे मिलि नेह जाल नाख्यो तू। मेरे जान हंस प्यारो रूप की मयूख सींच बचन पिजख कैधों मृदु हंसि भाख्यो तू ॥ कीनों सुभ चार कैधों और ही बिचार सुतो तूही निरधार चार सुख अभिलाख्यो तू। एरी अरबिन्द-नैनी पिकबैनी भोर ही तें गोकुल के चन्द को चकोर करि राख्यो तू ॥ ३३४ ॥

सवैया ।

पांव धरे दुलही जिहि ठौर रहै मतिराम तहां दृग दीने। छांड्यो सखान के साथ को खेलिबो बैठि रहे घर ही रस भीने ॥ सांझहि तें ललकैं मनहीं मन लालन यों रस सों बस कीने। लोनी सलोनी के अंगन माहं सु गौने की चूनरी टोने से कीने ॥ ३३५ ॥

उपपति यथा कवित्त ।

कुंडल कपोलन पै कटि पट पीत सोहै बरनी न

लात मोपै रूप की निकाई है। कालिदास दूलह से उलहे फिरत हरि जानि ना परत कला दूती ने सुनाई है॥ भेट हू भई है ना सहेट हू को व्योत लंग्यो करवे को चाहत गोविन्द मन भाई है। गोनहाई एक बाल काहू को जु आई देखो गोकुल को न्याव सेज साजत कन्हाई है॥ ३३६॥

चंदमई चंपक जराव जरकस मई आवतहीं गैल वाके कमलमई भई। कालिदास मोद मद आनद विनोदमई लाल रंग मई भई बसुधा सुधा मई॥ ऐसी बनि बानिक सी मदन छकाई रसिकाई की निकाई लखि लगन लगी नई। नेह को हितै करि गोपालै मोह दै करि सखिन दुचितै करि चितै करि चली गई॥ ३३७॥

कुंजन तें आवति नबेली अलबेली चली सोभा अंग अंगन की आवत उदै भई। देवकीनन्दन मुख छबि की निकाई लसै चारो ओर चांदनी प्रकास कर ह्वै रई॥ स्याम सुख भाखी तुम को हौं कित जैहौ सुनि बैन मग थाकी फिर वाहीं ठौर ठैगई। लालन की ओर दृग जोर कसि कोर तन तोर भकभोर चित चोर करि लै गई॥

हाथ हंसि दीनी भीति अंतर परोस प्यारी हाथ साथ छकी मति कान्हर प्रवीन की। निकस्यो झरोखन ह्वै विकस्यो कमल जैसे ललित अंगूठी जामे चमक चुनीन

की । कालिदास तैसी सोभा मेहंदी के बुन्दन की चाह नख चंदन की लाल अंगुरीन की । तैसी छबि छाजत है छपा की छला कीं पुनि कंचनचुरीन की जराज पहुं-चीन की ॥ ३३९ ॥

सवैया ।

आखिर जाए अहीर के हो जिय जानत नेक ना मेरे सुभायहो । दै दधि दान जु पै सुरझौ पद्माकर फेट कहा अरुझाय हो ॥ जो रस चाहत हौ तुम सांवरे सो रस गोरस रोके न पाय हो । पैहो कबै जब गोधन गाय हो बीन बजाय हो मोहि रिझाय हो ॥ ३४० ॥

वैसिक यथा ॥

कानन तान तरंगन मे रम होय गए सब भांति अ-याने । जा उर पै दृग बानन के न लगी रुचि राखन हेत निसाने ॥ औ सरदार सुने सिसिकी रति मे बिन मोल-न आप बिकाने । क्यों करतार किये तिन को जिन बार-बधू के विलास न जाने ॥ ३४१ ॥

चतुर्विधनायकलक्षण सवैया ।

सो अनकूल जो एकतें दूजिये नारि कहूं सपने नहिं जाने । दच्छिन सो सब को सम जाने सदा रहैं जासो सबै सुख माने ॥ धृष्ट वहै अपराध भयो बरजेहु खिझै

रस ठानई ठाने। से सठ औ कपटी रस केलि मे सुन्दर नायक चारो बखाने॥ २४२॥

अनुकूल यथा।

नारि पराई तें बोलिवो को कहै कौंहू न काहू को भूलहू हेरे। नैनो लखै मन वेई औ मैंहू लियो उन को लिखि चित्र हियेरे॥ बांधि सकै उन को मन को बंध्यो रैन दिना रहे मेरई नेरे। लेस नहीं उन मे अपराध को मान की हौसें रही मन मेरे॥ २४३॥

डोलत हैं इक संग खरे इक संगही बोलत हैं मन भायक। दूसरी बात न जानत ए निसबासर संग रहैं सुख दायक॥ कौन समान करे इन की गति ये इनहीं को सदा खग नायक। देखि परे खगराजन मे इक सारस सांचे सिपारस लायक॥ २४४॥

दच्छिण यथा।

बहि अन्तर गूढ़ अगूढ़ निरन्तर काम कला कहि कौन गने। कहि केसव हास बिलास सबै प्रतिघोस बढ़े रस रीति सने॥ जिन को जिय मेरई जीव जियै सखि काय मनो बच प्रेम घने। तिन को कहै आन बधू के अधीन सु सापरतीत कियो सपने॥ २४५॥

धृष्ट यथा।

ऋतुराज के आगम लोग सबै सु गनै गहवे बड़ भा-

गन में। इन के मन लै के अलिन्द सदा नित भाय के गुंजत आंगन में॥ जिन के सुचि सुन्दर बोल सुनै मन छोहि नहीं अनुरागन में। कत कोकिल कूर किये बिधना सखि बोले सदा बन बागन में॥ ३४६॥

सठ यथा।

बोल यहै वृषभान सुता को सुनायो जु काम्हर कौन हूं फेरे। सुन्दर नन्द के मंदिर भीतर कैसो चितैरु चितेरो चितेरे॥ राधिका दौर चलीं सुनि देखन भेद न जान्यो गई जब नेरे। पीछे तें आप गही पिय प्यारी पै लै गयो संगर धाम अंधेरे॥ ३४७॥

मानी, बचनचतुर, क्रियाचतुर का लक्षण दोहा

करै जु तिय पै मान पिय मानी कहिये ताहि।
करै बचन की चातुरी बचनचतुर सो आहि॥३४८॥
करै क्रिया की चातुरी क्रियाचतुर सो जान।
इन के उदित उदाहरन क्रम तें कहत बखान॥३४९॥

मानी यथा कवित्त।

कूजत सिखंडी है कलिन्दनंदिनी के तीर वा कदंब खंडिनि कदंबनि बिहरि के। ताके तरे कौतुक सु अद्भुत है कृष्णलाल रावरे चलेतें हौं दिखाऊंगी दवरि के। ठाढ़ी हेमलतिका पै नागिनि कुटिल कारी पूंछ कबि

छाई छिति छोर लौं पसरि के। कंज केलि केहरि सकूप गिरि कंबु कीर कैरव कलानिधि को फन सों पकरि के॥ ३४७॥

कंचन कलस पर पन्नगकुमार राजै आछी आतसी मे रूप मुकुता मचत है। बिम्ब पर कीर कीर ऊपर कमल तापै मनमथ धनु हाव भाव सो रचत है॥ द्विजराज श्रीपति परम आचरज यह मुनि गन हू के लखि मानस लचत है। घनपर बिज्जु बिज्जु ऊपर सरद चंद चन्द पर राहु तापै सूरज नचत है॥ ३४८॥

जुगुल कुम्भ के बीच देख्यो रेख जोन्हई की ताके अध अर्ध इन्दु अङ्क मे अवनिजात। सावक भुजंग जुग जोहत जुगल ओर जलचर जुगल जलूस के न ठहरात॥ रघुराज आरसी द्वै ताके बीच बारिज द्वै सुक मुख लीने एक मध्य में सुजलजात। बिम्ब फल अन्दर बिलोके हैं अनार बीज कौतुक सकल ससि मण्डल में दरसात॥ ३४९॥

सवैया।

कोमल कंजन की कलिका अलि काहे न चित्त तहां तू लगायो। मंजरी मंजु रसालन की तिनको रस क्यों नहिं तो मन भायो॥ फूली सु औरै अनेक लता हरि दास जू पायो बसंत सुहायो। छोड़ गुलाबन के बन तू कटसैरवा पै किहि कारन आयो॥ ३५०॥

केवरो केतकी औ करना नव कंज परागन के रस की है। खूभो गुलाब नेवारी जुही अरु बेला सुबास दिना दस की है॥ चंदन चूर मृगम्मद धूर कपूर की पांडरी की खस की है। माथुर प्यारे सुगंधन में सब तें खुसबूये सिरे जस की है॥ ३५१॥

वचन चतुर यथा कवित्त।

दूसरे की बात सुनि परत न कान जहां कोकिल कपोतन की धुनि सरसाति है। छाय रहे द्रुम बहु बेलिन सों मतिराम अलि कुल कलित अंधारी अधिकाति है॥ नखत से फूलि रहे फूलन के पुंज बन कुंजन में होत जहां दिन ही में राति है। ता बन की बाट कोऊ संग ना सहेली कहि कैसे तू अकेली दधि बेचन को जाति है॥३५२॥

क्रिया चतुर यथा सवैया।

होरी के औसर गोरी सबै मिलि दौरीं लखै जब कान्हर आयो। ह्यां इन में निज भावती देख भयो मन भावन को मन भायो॥ हाथ पसारे न सूझ परै तहं यों कछु लाल गुलाल उड़ायो। बाहन बांधि हिये लगि के हरि राधिका के मुख सों मुख छायो॥ ३५३॥

प्रोषित लक्षण दोहा।

व्याकुल होय जु बिरह बस बसि बिदेस में कंत।
ताही को प्रोषित कहत जे कोविद बुधिवंत॥ ३५४॥

प्रोषित यथा कवित्त ।

परी तेरे सु मुख सुधाधर की दुति जा पै लालित किये री बचनामृत अगाधा सों । सेवक त्यों तेरही उरोज सुधा कुंभन को परसि प्रसेद पूर पूर मन साधा सों ॥ एरे मंद पौन बेगि करि जैये गौन पुनि ऐसई सुनैये गो सनेस मेरो राधा सों । तेरी गुही गर जो न होती बनमाल तो बचावती को मोहि बिरहानल की बाधा सों ॥ ३५५ ॥

प्रान जो तजेगी मदनाग में मयंक मुखी प्रान घाती पापी कौन फुली है जुही जुही । भृंगी गन गान कैधों मैन कैधों मैन बान दच्छिन पवन कैधों कोकिला कुही कुही ॥ मधु के मयंक के मकुन्द लाल तरुनाई रजनी नि-गोड़ी रंग रंगन कुही कुही । जौलौं परदेसी प्यारे मन में बिचार करे तौ लौं तूती प्रगट पुकारी रे तुही तुही ॥३५६॥

मोद मदमाती नख रेखन बिलोकि छाती राती ह्वै नवेली चली सेज तजि तैसे कै । कहै पदमाकर कह्यो मैं के कहा तू चली यों कहि गह्योई ऐंच अंचल अनैसे कै ॥ ताही समै रोस करि अधर कपाय कछू दृग भरि भावती सु बोलि उठी ऐसे कै । छोड़ अरे छोड़ मुख मोर के कहे जे बैन ते अब बिसारे कहो बिसरत कैसे कै ॥ ३५७ ॥

सवैया ।

काहू की भूल न भूलत हौ झुकि झूलत हौ परि

प्रेम के झूलहि । प्रीति छिये पहिचानत हौ नहि जानत हौ बिरहा तन सूलहि ॥ मोद भरे मन माहि मलिन्द रहौ अनकूल सुखी सुख मूलहि । को तुम सो कहिये अग में नित सेवत हौ इक सेवती फूलहि ॥ ३५८ ॥

अथानभिज्ञ लक्षण दोहा ।

बूझै जो न तियान के ठानै बिबिध बिलास ।
सु अनभिज्ञ नायक कह्यौ वहै नायकाभास ॥३५९॥

यथा सवैया ।

सूने अवास में पाय कै बालमैं बाल बिनोद के छन्द बढ़ावै । छंद कवित्त पढ़ै बहुतै गजराज भनै सुर पंचम गावै ॥ कंज बिलोकनि कोरनि सों मुसुकाति महा छबि छाक छकावै । ह्वै निरसंक भरी चहै अंक पै बालम बंक न अंक में आवै ॥ ३६० ॥

मंजन कै अति रंजन अंजन दै कर खंजन नैन नचावै । अम्बर भूखन बेस बनाय अनेक वै कंचुकी चोवा चढ़ावै ॥ साज सिंगारन सेज बिछाय कै सुन्दर मंदिर सूनो बतावै । बूझत है न इतै पर कूर तौ और कहा कोउ ढोल बजावै ॥ ३६१ ॥

इति नायक * त्रिभेदः अथ चतुर्विध दर्शन ।

रति आलम्बन होत है दम्पति दरसन पाय ।
यातें दरसनहू भयो आलम्बन में आय ॥ ३६२ ॥
सो दरसन ग्रन्थन मते बरनत हैं कवि चारि ।
श्रवण स्वप्न अरु चित्र में पुनि परतच्छ बिचारि ॥३६३॥
श्रवण नहीं दरसन बनै पै दोपति जुत आय ।
यह रति आलम्बन करत तातें बरनों जाय ॥३६४॥

तत्रादौ श्रवण यथा—सवैया ।

आनन पूरन चंद लसै अरविन्द बिलास बिलोचन पेखे । अंबर पीत लसै चपला छबि अंबुद मेचक अंग उरेखे ॥ कामहू तें अभिराम महा मतिराम हिये निहचै करि लेखे । तैं बरन्यो निज बैनन सों सखि मैं निज नैनन सों मनो देखे ॥ ३६५ ॥

पट पोत धरे कटि पै सरदार अपार कला करि जैबो करे । मृदु बोलन हाय कपोलन तें सुचि स्वाद सुधा की पुरैबो करे ॥ भुज भेटत भाव सबै रस के सब के चितचा-

* और भेद नायक त्रिभेद के छुटे जाते हैं जो स्थानाभाव से यहां पर नहीं लिखे जाते । अन्त में अनभिज्ञ नायक कवियों ने क्यों लिखा ? "सुन्दरीसर्वस्व" कार ने इस भेद को न जाने क्या समझ कर छोड़ दिया है ।

ह.बतैबो करै। कित धौं वह नन्द कुमार चरी बिन देखत आप दिखैबो करै॥ ३६६॥

चित्रदर्शन यथा।

देखे चितेर में ठाढ़े हैं कान्हर टेढ़े भए मुंह नारि मुराए। कैसे बजावत हैं मुरली तिरछे तकि भौंह सों भौंह जुराए॥ चोटी की टेव यहां लौं परी यह राखिये बात कहां लौं दुराए। मोहनि मूरति सुन्दर सूरति चित्र·हु में चित लेत चुराए॥ ३६७॥

सांवरे अंगन में नख तें सिख लौं सुखमा के समूह सने हैं। याही बिसासिन बांसुरी में बस कीबे के ब्योंत न जात गने हैं॥ एई बड़े दृग हैं जिन गोप बधू उर घायल कीन्हे घने हैं। वाके हैं जैसो कछू सुनि राखे हैं चित्र में वेई चरित्र बने हैं॥ ३६८॥

स्वप्नदर्शन।

सूने सकेत में सोंधे सनी सपने में नई दुलही तू मिलाई। छौंड़ गयो पदमाकर दूर सों भौंहें मरोरत सेज लौं आई॥ या मन की मनही में रही जु समेटि तिया छतियां सों लगाई। आंखें गईं खुलि सीवी सुने सखि हाय मैं नीवी न खोलन पाई॥ ३६९॥

लै सपने अपने मन की दुलही उलही छवि भाग

भरी सी। अंक निसंक सो लै परजंक लला मुख चूमि सु घात धरी सी॥ यों लपटी चपटी छिय सों जसवन्त बिसाल प्रसून छरी सी। नैनन के खुलतें वह मूरति पास परी उड़ि जात परी सी॥ १९० ॥

कवित्त।

आए कान्ह द्वार आली वेगि उठि देखौ धाय काहू यह बात कही आनद सुधा मई। कतिकौ दिना के छिये तपन बुझायवे कौ छांहू परसाद प्यारि देखन तहां गई॥ झूठो सुख सपने में करन न पायौ एहो निरदई ऐसी मोहि तुरत दगा दई। जौ लौं भरि नैन वह मूरति निहारि देखौं तौ लौं नैन छांड़ि नींद बैरन बिदा भई॥ १९१ ॥

सपने में आयौ सखी सांवरो सलोनो वह जिहि अंग अंग सों अनंग कौ लजायो है। मोहनी सी बातें कहि कहि गहि गहि बांह भांति भांति हरख हजार उपजायौ है॥ कहै सिवदत्त मोपै कछू ना कह्यौ परै बिरह वियोग बिना नाह नै भजायो है॥ जौ लौं हंसि हंसि गरे लाऊं री रसिकराय तौलौं वा बजरमारो गजर बजायो है॥१९२॥

सपनेहू सौंवन न दयौ निरदई हूई बिलपत रहौं जैसे जल बिन मछियां। कुन्दन संदेसो आयौ लाल मधु-

सूदन को सबै मिलि दौरीं लैन अंगन बिसखियां ॥ बूझै समाचार ना सुखागर सनेसो कछू कागद के कोरो हाथ दीनी लेकि सखियां। छतियां सों पतियां लगाय बैठी बांचिवे को जौलों खोलों खाम तौलों खुल गईं अखियां॥

प्रत्यक्षदर्शन।

मृगहू तें सरस बिराजत बिसाल दृग देखिये न अति दुति कौलहू के दल मे। गंग वन द्विज से लसत तन आभूखन ठाढ़े द्रुम छांह देखि ह्वै गई विकल मे॥ चख चित चाय परे सोभा के समुद्र मांझ रही ना संभार दसा औरै भई पल मे। मन मेरो गरुवो गयोरी बूड़ि मै न पायो नैन मेरो हरुवो तरत रूप जल मे॥ ३७४॥

निपट असित गात याही मग आवै प्रात कौन कहीं बात जात गौवन के पाछे री। कोटिन अनंग के अनंग होत देखे अंग बालक प्रसंग स्वच्छ काछनी को काछे री॥ कहै कवि नंद देखि आनद को कंद रूप को ना फँसिजात मंद हास फंद डारे री। मोहती ततच्छन जगी सी अंग लच्छन वे आछी २ अच्छन की कुटिल कटाच्छैं री॥३७५

जादूगर सांवरो न जानी कस जादू कारी पंडित प्रवीन ह्वौं बिकानी प्रान प्यारे पै। आंगन सों जात घटा नट की वटा सी गैल छैल की छटा सी छवि देखति ह्वौं

हारे पै ॥ घूंघट के ओट चोट लागी इन नैनन में ऐसी लोटपोट भई पीत पटवारे पै । आई पन घट पै न घर की न घाट की हाँ नोखोरी नवल नट अटकी हमारे पै ॥

मंजुल मुकुट करि निकट धरीक रह्यो उत तें उचटि लोनी लटन मे लट गो । कहै बलभद्र लोनी लट तें उलट फेर ग्रीवा कल कंठ की निकाई में समिट गो ॥ भूलो २ फिरयो फेर ग्रीवा कल कंठहू तें आंगुरीन नाभी तें अचौंक आन छट गो । अटगो न मेरो मन कटगो निपट आली कटि के निकट पीत पट मे लपट गो ॥३७७॥

गौनहाई एक व्रज गोकुल गवारि आई ताके सुखपाल कर मोतिन सवारे हैं ॥ ताने छिन एक घनस्याम मनमोहन को माधवी निकुंज के विकाम मे निसारे हैं ॥ कोइ के सकोच सोच पृकृति मलेलिन सों कैसे काम कैवर कुसीस भर मारे हैं । सांवरे मे चारु खेलें सखन मझार पिय एही अनुहार कैधों यही प्रान प्यारे हैं । ३७८ ॥

अथ पुर्वानुराग ।

जो पहिले सुनि कै निरखि बढ़े प्रेम की लाग ।
बिन मिलाप है विकलता सो पूरवानुराग ॥३७९॥
यातें दरसन मे लिख्यो लै पूरव अनुराग ।
जो रसिकन प्यारो सदा दंपति हिय अनुराग ॥

पूर्वानुराग यथा—कवित्त ।

जैसी छबि स्याम की पगी है तेरी आंखिन मे तैसी छबि तेरी स्याम आंखिन पगी रहै । कहै पद्माकर ज्यों तान मे पगी है त्योंहीं तेरी मुसक्यान कान्ह प्रान मे पगी रहै । धीर धर धीर घर कीरति किसोरी भई लगनि इतै उतै बराबर जगी रहै । जैसी रट तोहि लगी माधव की राधे तैसी राधे राधे राधे रट माधवै लगी रहै ॥३८१॥

भेद बिन जाने एती बेदन बेसाहिबे को आज हों गई ती बाट बंसी बटवारे की । कहै पद्माकर लटू ह्वै लोट पोट भई चित मे चुभी जो चोट चोंप चटवारे की ॥ बावरी लों बूझति बिलोकति कहा तू बीर जाने कहा कोऊ पीर प्रेम हटवारे की । उमड़ि २ बहै बरसै सु आंखिन ह्वै घट मे बसी जो घटा पीत पटवारे की ॥३८२॥

आय कै निकट वह पीत पटवारो झट अट पटे बैन बरजोर बतरात है । देत ना भरन घट पट को पकर रहै नट लों नचावे बैन नैक न डरात है ॥ मोह तें अधिक उर औटत है लाजन तें लंगर निकट हटकै सो अधिकात है ॥ घर घर घेर सुनै मन हट जात है री पनघट जात ताको पन घट जात है ॥३८३॥

चहत दुरायौं तोसों कोलगि दुराऊं दैया साची हौं

कहौं री बीर सब सुख कान दै। सांवरो सो ढोटा एक ठाढ़ो तीर जमुना के मीतन निहारो नीर भरि अंखि-यान दै॥ वा दिनां तें मेरही दसा को कछु बूझै मत चाहै जो जिवायो मोहि वही रूप दान दै। हाहा कर पाय परौं रह्यो नाहिं जाय घर घनघट जान दैरी घन घट जान दै॥ ३८४॥

सवैया।

कुंज गई हुती लै सखियान को आयो तहां कढ़ि नन्द को बारो। मोर पखान को मौर धरे गरे गुंज हरा छवि पुंज बगारो॥ हेर अजान सी ह्वै रही बीर अधीर ह्वै जाछन मोहि निहारो। बै गयो नेह को बीज हिये मन लै गयो मोहन मोहिनि वारो॥ ३८५॥

आनद बीज वई अंखियांनि जमाई बिथान की जो मे जई है। बेल बढ़ाई चबाव की जो ब्रज धामन धामन फैल गई है॥ दास लगाय कै तांवरि फूल फली दई आनि कसानु मई है। प्रीति बिहारी की मालिनि री यह बारी मे रीति बगारी नई है॥३८६॥

दोहा।

संग्रह कियो अजान यह रस ग्रंथन को सार।
छमिहै चूक सुजान पुनि करिहौ लै परचार॥

सम्वत गुन श्रुति अंक विधु माधव पूरन इन्द ।
यह मनोज की मंजरी विकसी हेत मलिन्द ॥

इति श्री मनोजमंजर्य्यां द्वितीय कलिका समाप्ता ।

—***—

ग्रंथावली जिस्के द्वारा यह मंजरी सुगथित हुई है।

रसार्णव, रसप्रबोध, रसरत्नाकर, रसराज, रसिकमोहन, रसिकप्रिया, कविप्रिया, काव्यरसायन, काव्यनिर्णय, शृंगारशिरोमणि, शृंगारलतिका सटीक, सुन्दरशृंगार, शृंगारसंग्रह, शिवसिंह सरोज, सुधासर, साङ्गधरपद्धति, शब्दार्थभानु, व्यंग्यार्थकौमुदी, बिहारीसतसई, बरवैव्यंग्यविलास, बलरामकथामृत, अङ्गरत्नाकर, अङ्गदर्पण, अनुरागबाग, दिगविजयभूषण, और जगतविनोद इत्यादि । इन ग्रथों के अतिरिक्त कई उद्दण्ड कवियों से अपूर्व स्फुट कविता तथा मत भेद मिले हैं [जो किसी ग्रन्थ में नहीं दीखते] अतएव उपरोक्त ग्रन्थकार तथा सहायक महाशयों को अनेकशः धन्यवाद है । जिन सत कवियों के नामादि में स्टार [*] लगे हों उन्हे जानना चाहिए कि विद्यमान और सहायक हैं ॥

—***—

कवियों की नामावली जिन की कुछ कलिका में कवित्त हैं।

१ * अज्ञान (ग्रंथकार)
२ अहमद।
३ आलम।
४ ईस।
५ कविन्द।
६ कालिदास।
७ किसोर।
८ कुमार।
९ कुन्दन।
१० कृष्णलाल।
११ केसव।
१२ कोलाहल।
१३ खानखाना(नौवाब)
१४ गजराज।
१५ ग्वाल।
१६ गिरधारी।
१७ गुमान।
१८ गोपाल।
१९ गंग।
२० घनआनद।
२१ चिन्तामणि।
२२ * चुन्नीलाल।
२३ जगदीस।
२४ जवरेस।
२५ जसवंत (म० जोधपूर)
२६ जोयसी।
२७ ठाकुर।
२८ दत्त।
२९ दयादेव।
३० * दामोदर।
३१ दास (भिखारी)।
३२ द्विजदेव(म० अयोध्या)
३३ दूलह।
३४ देवकीनन्दन।
३५ देव।
३६ नन्द।
३७ पजनेस।
३८ पदमाकर।
३९ परसाद।
४० परताप।
४१ परमानद।
४२ परमेस।
४३ पुरान।
४४ पंडितप्रवीन।

४५	प्रवीन ।	६६	मंडन ।
४६	प्रवीनबेनी ।	६७	रघुराज (म० रीवां)
४७	बलदेव ।	६८	रसखान ।
४८	बलभद्र ।	६९	रसलीन (गुलामनबी)
४९	* बिजयानन्द ।	७०	रसाल ।
५०	ब्रजचंद ।	७१	राम कवि ।
५१	बेनी ।	७२	रिषिनाथ ।
५२	बंसीधर ।	७३	लाल कवि ।
५३	भगवंत ।	७४	लीलाधर ।
५४	भोज ।	७५	सदानंद ।
५५	भौन ।	७६	सरदार ।
५६	मकरन्द ।	७७	सिवदत्त ।
५७	मकुन्दलाल ।	७८	सिरताज ।
५८	मतिराम ।	७९	श्रीधर ।
५९	मन्य ।	८०	श्रीपति ।
६०	महाकवि ।	८१	सुकदेव ।
६१	माथुर ।	८२	सुन्दर ।
६२	मुबारक ।	८३	सूरति ।
६३	* मूंगा ।	८४	सेनापति ।
६४	मोहनलाल ।	८५	सेवक ।
६५	मंचित ।	८६	सोभ ।

८७ संकार ।

८८ संगम ।

८९ संब ।

९० संतन ।

९१ संभु

९२ हनुमान ।

९३ हरदास ।

९४ हुसेन ।

९५ हृदेस ।

—❀❀❀—

शुद्धाशुद्धपत्र ।

शुद्ध	अशुद्ध	पृष्ठ	पँक्ति
चैत	चीत	२	१
ग्वालिनि	ग्वालिनी	२	१८
सौतिन के	सौतिन की	२	२०
जंवन	जवन	५	५
पग तल	पड़ा तल	५	६
उदाहरण	उदारहण	७	७
औरै	और	८	१०
पद्मा	पद्म	८	१५
बिलोके	विलाके	१०	३
रहै काकु	है काकु	१०	४
लागै	लागे	११	१८
जानि	जाति	१५	१३
जानि	जाति	१५	१४
छरके	छटके	१६	१
बतरात	बरात	१७	४
प्रवीन	परवीन	१८	२
आगै	आड़ी	१८	७

गजगौहर,	गजगौनर	७४	१४
पोखे	पोखे	७७	८
पहुंचे की,	पहुंचे की	७७	२०
कहै	कहै	७८	८
प्यारी	न्यारी	७८	१८
मूखी	मूखी	७८	११
अंजीरन,	जाजीरन	८०	१६
मनमत्थकी,	मनमत्थ की	८०	१७
दूजि	दूजे	८०	१८
त्रिलोकि विलास,	त्रिलोकि	८२	१०
हिय मे,	हिय मो	८२	१३
तीखो	तीख्यो	८२	१४
आय	आप	८७	५
याव	पाव	८०	१०
कुरविन्द,	कुरावन्द	८१	६
कुसुंभी	कसुमी	८१	१६
फेर	फेट	८४	७
गनिये	गतिये	८५	११
किधीं	किधो	८५	१८
आय	आप	८६	८
प्यारिये	प्यारी पै	८६	८